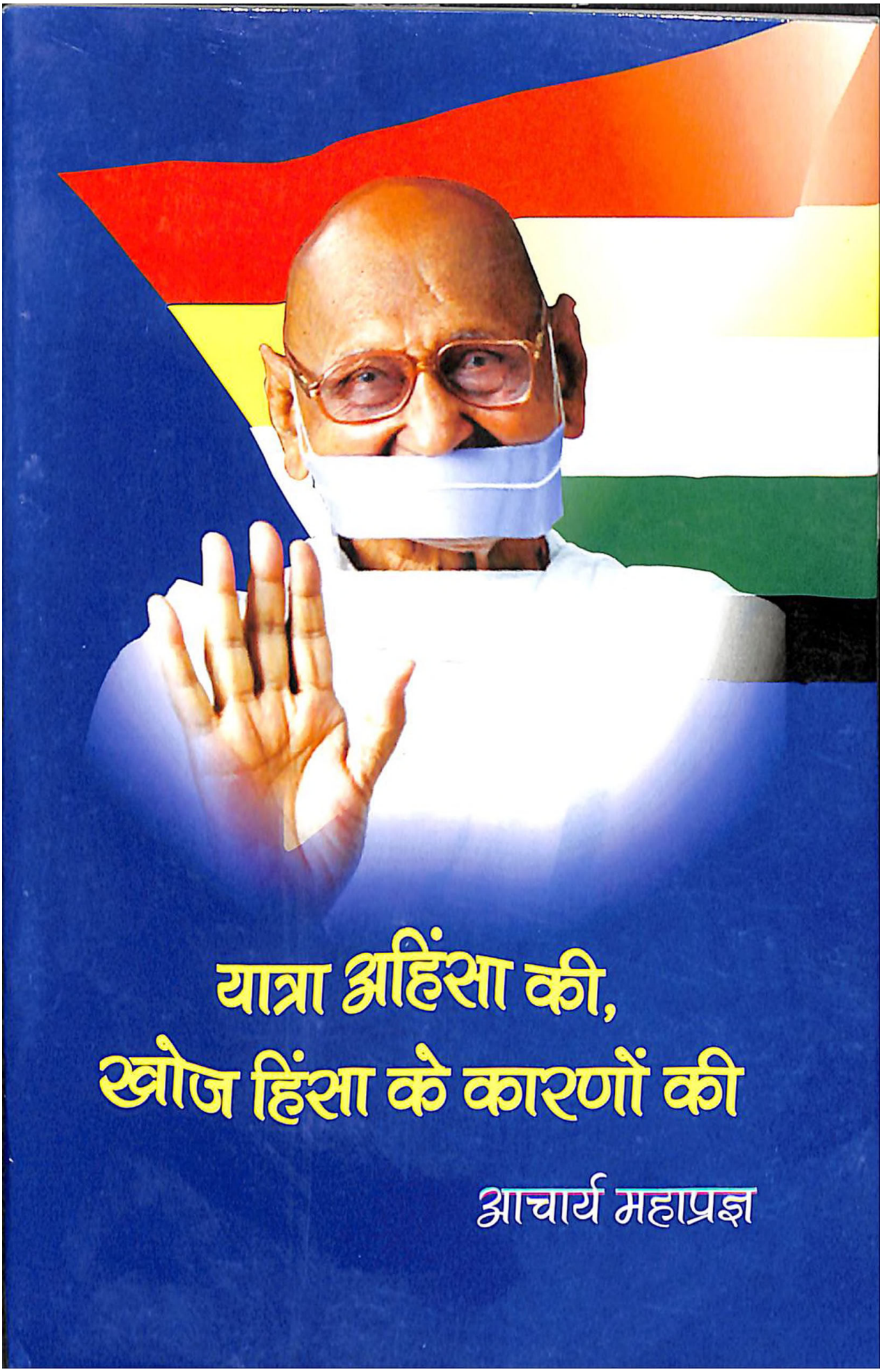

यात्रा अहिंसा की, खोज हिंसा के कारणों की

आचार्य महाप्रज्ञ

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

यात्रा अहिंसा की :
खोज हिंसा के कारणों की

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

जैन विश्व भारती प्रकाशन

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

यात्रा अहिंसा की :
खोज हिंसा के कारणों की

आचार्य महाप्रज्ञ

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

प्रकाशक : जैन विश्व भारती
लाडनूं ३४१ ३०६ (राज.)

© जैन विश्व भारती

द्वितीय संस्करण : जनवरी - 2009

मूल्य : २५.००

मुद्रक : कला भारती,
नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

प्रस्तुति

अहिंसा यात्रा का पहला वर्ष। हिंसा के वातावरण में रहने का पहला प्रयोग। कसौटी थी अहिंसा को जीने वालों की। गुजरात में पहला पड़ाव। वहां हो रहे थे हिंसात्मक दंगे। यदि अहिंसा यात्रा का संकल्प नहीं होता तो संभवतः हम हिंसा से झुलसते प्रदेश में प्रवेश नहीं करते। हमने अहिंसा को हिंसा की चुनौती मानकर गुजरात में प्रवेश किया। मुझे संतोष है कि अहिंसा का स्वर हिंसा की आवाज के नीचे नहीं दबा।

अहिंसा यात्रा के छह वर्षों की संपन्नता हो चुकी है और सातवां वर्ष चल रहा है। इस अवधि में हमने अनुभव किया कि आम आदमी शांति से जीना चाहता है और शांति के लिए अहिंसा के वातावरण को बनाए रखना चाहता है, किन्तु कुछ व्यक्ति अपनी महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए हिंसात्मक उत्तेजना का वातावरण बना देते हैं। उसे बदलने के लिए अहिंसासेवी कार्यकर्ता जागरूक रहें तो वातावरण को बदला जा सकता है।

प्रस्तुत पुस्तक का कलेवर बहुत छोटा है किन्तु इसमें जो कुछ है वह छोटा नहीं है।

प्रस्तुत पुस्तक का शीर्षक **'यात्रा अहिंसा की : खोज हिंसा के कारणों की'** आकस्मिक भ्रम पैदा करने वाला है, किन्तु पुस्तक पढ़ने के बाद सचाई सामने आ जाती है कि हिंसा के कारणों की खोज किए बिना अहिंसा का विकास नहीं किया जा सकता।

भूखमरी, गरीबी और बेरोजगारी–ये सामाजिक समस्याएं हैं, किन्तु इनसे हिंसा का उद्दीपन होता है, इसलिए ये अहिंसा के विकास में बाधा डालने वाली समस्याएं भी हैं। क्रोध, लोभ और अहंकार का आवेश वैयक्तिक समस्याएं हैं। इनसे समाज प्रभावित होता है इसलिए ये हिंसा के प्रमुख

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

निमित्त हैं। साम्प्रदायिकता का आवेश और जातिवाद का आवेश हिंसा के प्रमुख हेतु बनते हैं।

हमारा विश्वास है कि हिंसा के कारणों की खोज किए बिना और उनका निवारण किए बिना अहिंसा की यात्रा को सार्थकता नहीं दी जा सकती। इन चिन्तन-बिन्दुओं के द्वारा ही हिंसा के कारणों की खोज और निवारण के प्रयत्नों द्वारा अहिंसा यात्रा की सार्थकता समझी जा सकती है।

२ मार्च २००८ **आचार्य महाप्रज्ञ**

आसीन्द

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

अनुक्रम

१.	सुख से सांस लेने की कला	१
२.	अहिंसा के तीन रूप	७
३.	अहिंसा की नीति	८
४.	प्रसंग रथयात्रा का	९
५.	अहिंसा का नया आयाम	१६
६.	अहिंसा की मर्यादा	२६
७.	हिंसा की उष्मा : अहिंसा की बूंदें	२९
८.	हमने देखा एक शांति का पुरोधा	३२
९.	साम्प्रदायिक सद्भाव गोष्ठी	३८
१०.	तनाव शांति में बदल गया	४०
११.	बनास बस्ती : संकल्प की सिद्धि	४३
१२.	एक समस्या : एक प्रयोग	४६
१३.	अहिंसा समवाय मंच : एक गोष्ठी	४८
१४.	अहिंसा सार्वभौम	५४

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

सुख से सांस लेने की कला

सुख से सांस वही व्यक्ति ले सकता है, जो सुख से सांस लेने की कला जानता है। सुख से सांस लेने की कला है—अहिंसा।

अहिंसा कोई दर्शन नहीं है, वह जीवन व्यवहार है। शांति अहिंसा का व्यावहारिक रूप है। क्या शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के बिना तुम सुख की सांस ले सकते हो? इस प्रश्न का उत्तर नकार में होगा। एक परिवार, एक संगठन। परिवार सामुदायिक जीवन की लघु इकाई है। संस्था उससे महत् इकाई है। संगठन उससे महत्तर इकाई है। इनमें यदि शांतिपूर्ण सहअस्तित्व नहीं है तो न तनावमुक्ति का अनुभव होगा, न सरसता रहेगी और न सफलता का द्वार खुलेगा। मस्तिष्क की काफी ऊर्जा निषेधात्मक प्रवृत्ति में खर्च हो जाएगी।

अनेक विचारक लोग विश्वशांति के लिए काम करते हैं। लक्ष्य अच्छा है, इसमें कोई दो मत नहीं हो सकते। मतभेद प्रक्रिया में हो सकता है। यदि तुम अपने जीवन में शांति का अनुभव नहीं करते, परिवार, समाज और अपने जीवन में शांति की प्रतिष्ठा नहीं कर सकते तो विश्व शांति के दिवा स्वप्न को यथार्थ में नहीं बदल सकते। सबसे पहले अपने आवेशों पर नियंत्रण कर शांति का अनुभव करें। सामुदायिक चेतना का विकास कर परिवार में शांति की प्रतिष्ठा करें। अर्थ व्यवस्था को स्वस्थ बनाकर समाज और राष्ट्र की शांति के ध्वज को फहराएं, फिर विश्वशांति के लिए प्रयत्न करें, सफलता मिलेगी।

अहिंसा व्यावहारिक कैसे बने, इस विषय पर मैंने चिन्तन किया। उस चिन्तन के कुछ सूत्र मैंने जनता के सामने प्रस्तुत किए।

१. अहिंसा अध्यात्म का व्यावहारिक प्रयोग है।

इसलिए इसे अपने से प्रारंभ करें।

२. अहिंसा के संस्कार का निर्माण करें।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

३. अहिंसा व्यवहार में लाएं, पहला प्रयोग परिवार में करें, फिर इसे आगे बढ़ाएं।

अहिंसा का पहला प्रयोग है—घर में शांति।

शांति का पहला उपाय है—विवेकपूर्ण मौन।

शांति का दूसरा उपाय है—अपने भावों पर नियंत्रण और नियंत्रण का उपाय है श्वास प्रेक्षा।

अहिंसा यात्रा एक स्वप्निल यात्रा है। इस यात्रा के दौरान हमनें कुछ सपने देखे। केवल सपने नहीं देखे, सपनों को यथार्थ होते देखा। इसलिए इसे यथार्थ को छूनेवाली यात्रा भी कह सकते हैं। हम साधु हैं, पद-यात्री हैं। न हमारे पास पैसा है और न तेज रफ्तार से चलने वाले वाहन, बैलगाड़ी भी नहीं है, इसलिए हमारी यात्रा मुख्यतः गांवों की यात्रा और गौणरूप में नगरों की यात्रा है।

हम बड़े आदमी नहीं हैं, इसलिए हमारा संपर्क केवल बड़े लोगों से नहीं रहा; प्रथमतः ग्रामीण लोगों से रहा और क्वचित् कदाचित् शहरी लोगों से भी रहा।

हमने गांवों की समस्याओं और गांव में रहने वाली जनता की समस्याओं का अध्ययन किया। गांवों की समस्याओं का अध्ययन करते समय हमें लगा कि गांवों की अपेक्षाएं हैं, वे पूरी नहीं हो रही हैं।

शहरों में शिक्षित, अधिकारी और धनी लोग रहते हैं। इसलिए उनके सौन्दर्यकरण पर जितना ध्यान दिया जाता है उतना गांवों की स्वच्छता और सुव्यवस्था पर नहीं दिया जाता। शिक्षा, चिकित्सा और आजीविका की भी समस्याएं हैं। सरकार इस दिशा में प्रयत्न नहीं कर रही है, यह कहना उचित नहीं है। किन्तु जितना करना चाहिए उतना नहीं किया जा रहा है, यह कहना भी औचित्य से परे नहीं है।

सबसे अधिक मन को व्यथित करने वाला प्रसंग यह है—रोजगार के अभाव में अनेक व्यक्तियों और परिवारों को दो जून की पूरी रोटी भी उपलब्ध नहीं होती। हर राज्य की सरकार का संकल्प है कि किसी भी व्यक्ति को भूख से नहीं मरने दिया जाएगा। शायद भूख से मरने वालों की संख्या अधिक नहीं होगी, किन्तु भूख की पीड़ा भोगने वालों की संख्या बहुत ज्यादा है। इसका हमने प्रत्यक्ष अनुभव किया है।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

'बुभुक्षितः किं न करोति पापम्' इस सूक्त को यथार्थ होते हुए भी देखा है। अपराध, आतंकवाद और उग्रवाद की पृष्ठभूमि के बीज भूख में हैं। इसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता। हिंसा एक प्रकार की नहीं होती और उसका कारण भी एक नहीं होता।

हम अहिंसा को नए संदर्भ और नए परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करना चाहते थे। उसके अनेक पहलुओं पर चिंतन किया। हमने गहराई से अनुभव किया कि अहिंसा की चेतना को जागृत करने के लिए उसके साधक और बाधक दोनों तत्त्वों पर विचार करना आवश्यक है। अहिंसा और शांति के बाधक तत्त्वों की एक सूची निम्नलिखित है–

१. आवेश
२. मिथ्या दृष्टिकोण
३. मिथ्या आग्रह
४. मिथ्या आचार
५. मानसिक असंतुलन
६. अपने को उच्च मानने की मनोवृत्ति (Superiority-Complex)
७. अभाव–जीवन की प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति न होना
८. अतिभाव–असीम उपभोग, उपभोक्तावादी मनोवृत्ति।

१. आवेश

मैंने अनुभव किया कि अहिंसा की प्रतिष्ठा के लिए आवेश पर नियंत्रण बहुत आवश्यक है।

जातीय आवेश–अपनी जाति को सर्वश्रेष्ठ मानने की मनोवृत्ति जातीय आवेश पैदा करती है और वह जातीय आवेश हिंसा का कारण बनता है।

आवेश बहुत शक्तिशाली है। यह दूध का उफान नहीं, जिसे जल की कुछ बूंदों से शांत किया जा सके। यह तूफान है, इसे शांत करने के लिए बहुत तीव्र प्रयत्न की आवश्यकता है।

एक जाति के लोगों में अपनी जाति का अभिमान, एक सम्प्रदाय के लोगों में अपने सम्प्रदाय का अभिमान। कुछ लोग जातीयता के आधार पर जाति के आवेश को उभार देते हैं। कुछ लोग साम्प्रदायिकता के आधार पर साम्प्रदायिक आवेश को उभार देते हैं। आवेश हिंसा का रूप ले लेता है। हमने इन दोनों रूपों का साक्षात् किया।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

२. मिथ्या दृष्टिकोण

अहिंसा के विषय में बहुत लोगों का दृष्टिकोण सही नहीं है। कुछ लोग मानते हैं कि अहिंसा व्यक्ति को कायर बनाती है।

कुछ लोग मानते हैं कि अहिंसा से देश की रक्षा नहीं हो सकती। उसके लिए हिंसा जरूरी है।

कुछ लोग मानते हैं कि अहिंसा व्यावहारिक नहीं है।

३. मिथ्या आग्रह

कुछ मनुष्य अविकसित अथवा अर्द्धविकसित मस्तिष्क वाले होते हैं। ऐसे व्यक्ति आग्रह के आधार पर चलते हैं, सही और गलत का निर्णय नहीं कर पाते।

कुछ विकसित मस्तिष्क वाले व्यक्ति भी मिथ्या आग्रह के भंवरजाल में फंसे रहते हैं कि हिंसा के बिना जीवन चल ही नहीं सकता। इस कोटि के व्यक्ति आवश्यक और अनावश्यक हिंसा का विवेक नहीं कर पाते।

४. मिथ्या आचार

हिंसा और अनैतिकता को क्वचित् एकार्थक माना जा सकता है। अहिंसा का आधार है–सत्य। अनैतिकता का आधार है–असत्य। हिंसा का आधार भी उससे भिन्न नहीं है। हिंसा और अनैतिकता दोनों की पृष्ठभूमि में क्रूरता को देखा जा सकता है। करुणा के क्षेत्र में अनावश्यक हिंसा और क्रूरता के बीज पनप नहीं सकते।

करुणा चेतना का भावात्मक विकास है। उसकी तीन कोटियां होती हैं–

१. कुछ व्यक्ति प्रकृति से बहुत करुणाशील होते हैं। वे अनावश्यक हिंसा और अनैतिक व्यवहार कर ही नहीं सकते।

२. कुछ व्यक्ति जीवन की सचाई को समझकर करुणा की चेतना को जागृत करने का अभ्यास करते हैं। वे अनावश्यक हिंसा और अनैतिक व्यवहार से बचने का प्रयत्न करते हैं।

३. कुछ व्यक्ति प्रकृति से क्रूर और क्रूरता में विश्वास करने वाले होते हैं। उन्हें अनावश्यक हिंसा और अनैतिक व्यवहार करने में कोई संकोच नहीं होता।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

मानवीय सचाइयों को स्वीकार हम इस निष्कर्ष पर पहुंच सकते हैं कि सब मनुष्य एक कोटि के नहीं होते, इसलिए हिंसा का एक छत्र साम्राज्य भी नहीं हो सकता और हिंसा का सर्वथा उन्मूलन भी नहीं किया जा सकता।

५. मानसिक संतुलन

कुछ व्यक्ति प्रकृति से क्रूर नहीं होते, फिर भी मानसिक असंतुलन के कारण वे हिंसक बन जाते हैं। अवसाद (Depression) की स्थिति में व्यक्ति आत्महत्या भी करता है और दूसरों की हत्या भी करता है।

मानसिक परेशानी के कारण सेना में होने वाले आत्महत्या के आंकड़े चौंकाने वाले हैं और साथ-साथ इस बात की ओर इङ्गित कर रहे हैं कि मानसिक संतुलन का प्रशिक्षण हर क्षेत्र में होना चाहिए।

६. अपने को उच्च मानने की मनोवृत्ति

घृणा,अवमानना, तिरस्कार–ये सब हिंसा के रूप हैं। व्यक्ति जाति, कुल, बल, ऐश्वर्य आदि के कारण अपने को उच्च मानता है। उच्चता की अनुभूति के क्षणों में वह किसी जाति के प्रति घृणा, किसी व्यक्ति का अपमान और तिरस्कार कर देता है।

७. अभाव

दुःख की सूची में अनेक नाम हैं, जैसे-बुढ़ापा, रोग–शारीरिक रोग और मानसिक रोग, मृत्यु। भूख को इस सूची में सम्मिलित नहीं किया गया है किन्तु वह सबसे बड़ा दुःख है। बुढ़ापे के कष्ट को आदमी १०-२० या ३० वर्ष तक सहन कर लेता है। रोग को भी लम्बे समय तक सह लेता है। भूख जठराग्नि की पीड़ा है। उसे सहन करना सबसे अधिक कठिन है। कुछ दिनों के लिए उसे सहन करना भी मुश्किल होता है।

बुढ़ापे के दुःख को दूर करने के लिए वृद्धाश्रम बनाए जाते हैं। रोग की चिकित्सा के लिए अस्पतालों की लम्बी पंक्ति है। भूख की पीड़ा को मिटाने के लिए न कोई आश्रम है, न कोई चिकित्सालय। जिनके पास उपभोग सामग्री प्रचुर है वे भूख की पीड़ा को नहीं जान सकते, नहीं समझ सकते। इस पीड़ा का अनुभव वे करते हैं, जिन्हें दो बार खाने के लिए पूरी रोटी नहीं मिलती।

इस स्थिति के आधार पर यह मानने में कोई कठिनाई नहीं कि भूख से पीड़ित आदमी किसी भी अपराध में जा सकता है, किसी भी हिंसक प्रवृत्ति में भागीदार बन सकता है।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

८. अतिभाव

धन के दो रूप बने हुए हैं–

१. व्यक्तिगत धन

२. व्यापार अथवा उद्योग में व्यापृत धन।

व्यक्तिगत धन समस्या पैदा करता है। सीमातिरेक से होने वाला उपभोग प्रतिक्रियात्मक हिंसा पैदा करता है। धनी व्यक्ति प्रत्यक्ष हिंसा नहीं करता, परोक्ष हिंसा बहुत करता है।

एक भोज में ऐसा प्रदर्शन करता है कि गरीब वर्ग में प्रतिक्रिया उत्पन्न हो जाती है।

विवाह के प्रसंग पर ऐसा प्रदर्शन होता है कि गरीब वर्ग के मन में प्रतिक्रिया उत्पन्न हो जाती है।

व्यक्तिगत सुख-सुविधा के लिए इतना अधिक व्यय करता है, उससे प्रतिक्रिया पैदा हो जाती है।

अरबों का मकान, करोड़ों की साज-सज्जा, लाखों करोड़ों का प्रतिदिन व्यय–ये सब प्रतिक्रिया को जन्म देते हैं। वर्तमान की बढ़ती हुई हिंसा में प्रतिक्रियात्मक हिंसा का स्थान बहुत बड़ा है। इसका समाधान किए बिना समाज में भयमुक्त वातावरण, शांतिपूर्ण मनोदशा और सामाजिक समरसता का निर्माण नहीं किया जा सकता।

अहिंसा यात्रा के दौरान हमने हिंसा के इन आठ मर्मस्थानों पर ध्यान केन्द्रित किया। मुख्यतया आवेश, मिथ्या आचार और अभाव पर अधिक ध्यान केन्द्रित किया। समस्याएं अनेक हैं, पर उनमें तारतम्य है। हिंसा की उत्तेजना में इन तीनों का प्रमुख स्थान है।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

अहिंसा के तीन रूप

अहमदाबाद के सागर सदन में प्रथम प्रवास और प्रथम कार्यक्रम। तात्कालीन गृहमंत्री लालकृष्ण आडवाणी और मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी–दोनों कार्यक्रम में सहभागी बने। अहिंसा की व्याख्या करते हुए मैंने कहा–अहिंसा के तीन रूप हैं–

१. अहिंसा धर्म है।

२. अहिंसा नीति है।

३. अहिंसा कूटनीति है।

मैं मुनि हूं, अहिंसा मेरे लिए धर्म है।

मैं एक संगठन का नेतृत्व कर रहा हूं, इस स्थिति में मेरे लिए अहिंसा एक नीति है।

संगठन की एकसूत्रता के लिए कहीं-कहीं कूटनीति का प्रयोग भी आवश्यक होता है, किन्तु वह प्रयोग अहिंसा की परिधि में ही रहे, उसकी सीमा का अतिक्रमण न हो।

राज्य अथवा केन्द्र के शासक के कंधों पर बड़ा दायित्व होता है। उसके लिए भी अहिंसा नीति और अहिंसा कूटनीति–इन दोनों विषयों पर विचार करना आवश्यक है। राज्य अथवा राष्ट्र में अनेक जाति, अनेक सम्प्रदाय और अनेक विचारधाराओं के लोग होते हैं। कुशल राजनेता वह होता है, जो इनमें सामञ्जस्य स्थापित कर सकता है।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

अहिंसा की नीति

अहिंसा का 'नीति' के रूप में विकास होने का अर्थ है–

१. विरोधी विचारधाराओं में सामञ्जस्य का विकास।

२. शांतिपूर्ण सहअस्तित्व का विकास।

३. समन्वय का विकास।

अहिंसा का व्यावहारिक प्रयोग सरल नहीं है, वह प्रयत्न साध्य है।

अहिंसा नीति को व्यावहारिक बनाने के लिए आवश्यक है सतत प्रयत्न। उसके प्रयोग की अनेक भूमिकाएं हैं–

१. व्यक्ति और समाज में सामञ्जस्य बनाए रखने का प्रयत्न।

२. जातियों में सामञ्जस्य बनाए रखने का प्रयत्न।

३. सम्प्रदायों में सामञ्जस्य बनाए रखने का प्रयत्न।

४. जनता और जननेता में सामञ्जस्य बनाए रखने का प्रयत्न।

५. स्वार्थ और परार्थ (लोकहित) में सामञ्जस्य।

वही शासक राष्ट्र को उन्नति की ओर ले जा सकता है, जो अहिंसा नीति का अनुसरण करता है।

उपप्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी ने अहिंसा की नीति का समर्थन किया। अहिंसा का प्रयोग नीति के रूप में किया जाए तो समाज को हिंसा की समस्या से उबारा जा सकता है।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

प्रसंग रथयात्रा का

अहमदाबाद हमारे लिए चिन्तन और वार्त्ता का केन्द्र बन रहा था। हिंसा के वातावरण में अहिंसा यात्रा का आकर्षण बढ़ रहा था। यह विश्वास हो रहा था कि जल की बूंदें दूध के उफान को शांत कर सकती है। अहिंसा यात्रा से हिंसा के उफान और तूफान को समाधान मिल सकता है।

साम्प्रदायिक हिंसा का वेग कुछ कम हो रहा था। हिंसा की पृष्ठभूमि में एक वेग या आवेश होता है। वेग देने वाले कुछ व्यक्ति भी दंगा करवा देते हैं, किन्तु जब उनका रौद्र रूप सामने आता है तो हिंसा में लिप्त व्यक्ति भी समाधान की खोज में लग जाते हैं। हिंसा में लिप्त और हिंसा से आक्रान्त दोनों प्रकार के व्यक्ति हमारे संपर्क में आ रहे थे। हिंसा के वेग की स्थिति में दो समुदायों के बीच परस्पर संदेह पैदा हो गया। उस संदेह को परस्पर मिलन और वार्त्ता के द्वारा दूर करने का प्रयत्न किया जा रहा था, उन्हीं दिनों अहिंसा यात्रा से जुड़े हुए हिन्दू और मुस्लिम समाज के कार्यकर्ताओं ने हमारे सामने समस्या प्रस्तुत की–कुछ दिनों बाद जगन्नाथ रथयात्रा का प्रसंग सामने आ रहा है। उसके लिए हमें प्रयत्न करना चाहिए। उस समय फिर से हिंसा का वेग बढ़ सकता है।

साम्प्रदायिक सद्भाव के प्रयत्न

हमने रथयात्रा के प्रसंग को ध्यान में रखकर प्रयत्न और तीव्र कर दिए।

२ जुलाई,२००२ को मेरी सन्निधि में मुस्लिम समाज के अग्रणी व्यक्तियों की गोष्ठी हुई। पुलिस कमिश्नर श्री कौशिक, श्री राजकुमार गुप्ता आदि ने इस समस्या के संदर्भ में विचार विमर्श किया।

उसी दिन (२ जुलाई) महापौर श्री हिम्मतसिंह पटेल के साथ निगम के विभागाध्यक्ष मेरे पास आए। उन्होंने गुजरात में शांति को स्थायित्व देने के विषय में वार्तालाप किया। मैंने उन्हें बताया–'कटुता और अविश्वास के वातावरण में कोई समाज आगे नहीं बढ़ सकता। आज की अपेक्षा है–विश्वास

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

का वातावरण पैदा करें। अतीत को भुलाकर शांतिपूर्ण वातावरण का निर्माण करें। इस अवसर पर महापौर, टाउन प्लानिंग के चेयरमेन हसनखान पटेल, शहर कांग्रेस अध्यक्ष श्री राजकुमार गुप्ता, ताजिया कमेटी के चेयरमेन श्री जे.बी. मोनिन, श्री बदरूद्दीन शेख, दरियाखान घुम्मट के प्रमुख श्री इमानुद्दीन आदि ने विचार व्यक्त करते हुए कहा–'आचार्यवर ! आपका मार्ग-दर्शन तनावपूर्ण वातावरण को शांतिपूर्ण वातावरण में बदल सकता है।'

५ जुलाई को पुलिस कमिश्नर श्री कौशिक और ओ.पी.माथुर से वार्तालाप हुआ। उन्होंने हिन्दु-मुस्लिम साम्प्रदायिक सौहार्द के लिए जो प्रयत्न चल रहा है उस पर प्रसन्नता प्रकट की। श्री कौशिक ने कहा–'आपके प्रयत्न से जो सौहार्द का वातावरण बन रहा है, वह भविष्य का शुभ संकेत है।'

हमें पता चला कि केन्द्रीय सरकार के सामने प्रतिबंध लगाने की बात चल रही है। रथयात्रा पर प्रतिबंध लगाने का चिन्तन वर्तमान परिस्थिति में अस्वाभाविक नहीं था। वह सौहार्दपूर्ण भविष्य के लिए हितकर नहीं था इसलिए हमने प्रतिबंध का चिन्तन करने वाले राजनेताओं से सम्पर्क किया और उनके सामने अपना दृष्टिकोण भी प्रस्तुत किया। उस समय मैंने एक संक्षिप्त संदेश दिया, केन्द्र सरकार तक भी उसे पहुंचाया।

संदेश

''हमने जब से गुजरात में अहिंसा यात्रा के साथ प्रवेश किया है, तब से यह प्रयत्न तीव्र रूप से कर रहे हैं कि यहां शांति स्थापित हो। अहमदाबाद में हमने सभी पक्षों के लोगों से संपर्क किया है। हम चाहते हैं कि दीर्घकालीन नीति द्वारा कोई स्थायी समाधान निकले।

शुक्रवार दिनांक १२ जुलाई को हिन्दुओं द्वारा प्रस्तावित 'रथयात्रा' के संदर्भ में हमने अलग-अलग लोगों से, जिसमें हिन्दू, मुसलमान, प्रशासकीय तथा पुलिस अधिकारी शामिल हैं, विस्तृत चर्चा की है।

सभी सहमत हुए हैं कि शांतिपूर्ण ढंग से यह कार्य सम्पन्न हो। दिनांक ६ जुलाई को एक संयुक्त बैठक हमारे सान्निध्य में होने वाली है, जिसमें एक संयुक्त अपील सभी पक्षों द्वारा जारी होगी। इस स्थिति में यह अपेक्षा है कि कोई भी राजनैतिक दल कहीं से भी इसमें हस्तक्षेप नहीं करे।

हमने पत्रों में पढ़ा है कि आपने प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयीजी से मिलकर यह अनुरोध किया है कि शुक्रवार १२ जुलाई,२००२ को

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

अहमदाबाद में निकलने वाली 'रथयात्रा' स्थगित हो। हमारे चिन्तन में ऐसा करना महान भूल होगी।

ऐसा होने से हमेशा के लिए दोनों संप्रदायों के बीच यह मामला उलझता रहेगा। इस दृष्टि से यह अवसर है कि रथयात्रा को प्रस्तावित रूप में ही पूर्ण शांति के साथ संपन्न करवाया जाए और इससे भविष्य में किसी भी संप्रदाय के धार्मिक उत्सव आयोजन के लिए मार्ग प्रशस्त हो जाएगा।

हम आशा करते हैं कि हमारे प्रयत्नों को गंभीरता के साथ सभी समझेंगे। आपसे अनुरोध है कि हमारा विचार अन्य सभी राजनैतिक दलों तथा सभी संप्रदायों के प्रमुख लोगों तक पहुंचाया जाए ताकि शांति के लिए चल रहे दीर्घकालिक प्रयास सफल हों।

यदि संभव हो तो इस संबंध में हम आपसे व्यक्तिगत चर्चा करना चाहते हैं ताकि भारत में सांप्रदायिक सौहार्द की दृष्टि से कोई स्थायी समाधान निकलने की दिशा में कार्यकारी परिणाम आ सके।

मंगल कामना सहित।

सागर सदन **आचार्य महाप्रज्ञ**

आचार्यश्री तुलसी सर्कल ५ जुलाई, २००२

शाहीबाग, अहमदाबाद-३८०००४

जगन्नाथ की रथयात्रा अहमदाबाद में १२४ वर्षों से निरन्तर निकल रही है। कुछ राजनेताओं का मत रहा कि इस बार रथयात्रा निकलेगी तो फिर से साम्प्रदायिक हिंसा भड़क सकती है।

हमें यह चिंतन सही नहीं लगा। ऐसा ज्ञात हुआ कि तीन पूर्व प्रधानमंत्रियों ने प्रधानमंत्री वाजपेयी से अनुरोध किया कि इस पर प्रतिबंध लगा दिया जाए। इस प्रसंग पर मैंने संक्षिप्त वक्तव्य में कहा—जगन्नाथ यात्रा पर प्रतिबंध लगाना भयंकर भूल होगी। इससे दोनों समुदायों में दूरी अधिक बढ़ जाएगी। फिर हिन्दू समाज कुछ समय बाद निकलने वाले 'ताजिए' के कार्यक्रम को सहन नहीं करेगा। सदा के लिए स्थायी विरोध बन जाएगा। रथयात्रा को स्थगित करना इस समस्या का समाधान नहीं हो सकता। उसका समाधान है—रथयात्रा साम्प्रदायिक सद्भाव का उदाहरण बने। इस विचार का सर्वत्र स्वागत हुआ। प्रधानमंत्री वाजपेयी, उपप्रधानमंत्री श्री आडवाणी,

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

विश्व हिन्दू परिषद और मुस्लिम समाज के नेता तथा अन्य राजनीतिक नेताओं ने इसका समर्थन किया।

सर्वसम्मत प्रस्ताव और संयुक्त अपील

६ जुलाई को हमारी उपस्थिति में फिर एक गोष्ठी आयोजित की गई। उसमें विश्व हिन्दू परिषद, बजरंग दल, मुस्लिम सम्प्रदाय, अलीमोनिनशाह, पठान खां तथा नगर के प्रतिष्ठित नागरिक भाग ले रहे थे। पुलिस अधीक्षक और पुलिस कमिश्नर श्री कौशिक भी उसमें उपस्थित थे। दो घंटे तक चिन्तन चला।

उस गोष्ठी में युवाचार्य महाश्रमण, मुनि सुखलालजी, मुनि महेन्द्रकुमारजी तथा हिन्दू समाज और मुस्लिम समाज के अनेक वक्ताओं ने अपनी भावना प्रस्तुत की। सबने साम्प्रदायिक सद्भाव का वातावरण बनाने में अपने सहयोग का वचन दिया। सबने प्रस्ताव को सर्वसम्मति से स्वीकृत किया।

प्रस्ताव की भाषा इस प्रकार है–

१. किसी सम्प्रदाय के उत्सव, त्यौंहार आदि का दूसरे सम्प्रदाय वाले अनादर न करें, यदि कर सके तो उदारतापूर्वक सम्मान करें।

२. कुछ व्यक्तियों द्वारा किए गए अपराध का पूरी जाति और सम्प्रदाय से बदला न लें, सबको अपराधी न मानें।

गोष्ठी की सम्पन्नता के बाद सभी सहभागियों ने जनता के नाम अपील की–

''भारत विश्व का सबसे बड़ा जनतांत्रिक देश है। यहां सभी सम्प्रदायों और सभी जातियों को अपनी आस्था एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है। यह एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। इसके साथ-साथ यह भी आवश्यक है कि हर नागरिक दूसरों की आस्था, उपासना एवं अभिव्यक्ति का अनादर न करे, प्रत्येक जाति एवं सम्प्रदाय के त्यौंहार, उत्सव, पर्व पर सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाए रखे। साम्प्रदायिक सौहार्द और परस्पर भाईचारा स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए अनिवार्य है।

१२ जुलाई, २००३ को अहमदाबाद में रथयात्रा का अवसर समुपस्थित हो रहा है। हम सभी नागरिकों से यह अपील करते हैं कि इस अवसर पर शांति बनाए रखने के लिए निम्न आचार संहिता का अनुपालन करें–

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

१. आपत्तिजनक नारों, गीतों आदि का उपयोग न करें।

२. जुलूस पूर्ण अनुशासित एवं शांतिपूर्ण ढंग से निकले।

३. किसी व्यक्ति या समुदाय द्वारा कहीं भी, किसी भी प्रकार का व्यवधान न किया जाए।

४. यात्रा के दौरान कानून और व्यवस्था बनाए रखने में सहयोग करें।

५. प्रशासन एवं पुलिस शांतिपूर्ण वातावरण बनाए रखने में सहयोग करे।

अहिंसा यात्रा के माध्यम से आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने जो सद्भावनापूर्ण एवं शांतिपूर्ण वातावरण का निर्माण किया है, इसमें हमारी सहभागिता बनी रहे।''

इस गोष्ठी ने सद्भावना का अपूर्व वातावरण निर्मित कर दिया। पुलिस कमिश्नर श्री कौशिक ने अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हुए कहा-''आचार्यवर! आज आपकी सन्निधि में अद्भुत काम हुआ है। जो वातावरण बना है, उससे ऐसा लगता है, रथयात्रा में पुलिस का काम तो केवल तटस्थ बनकर यात्रा को देखना मात्र रह जाएगा। मुझे विश्वास है-सर्वसम्मति से स्वीकृत प्रस्ताव का व्यापक प्रभाव होगा।''

वातावरण में सकारात्मक परिवर्तन

७ जुलाई को उपप्रधानमंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी ने साम्प्रदायिक सौहार्द के लिए किए जा रहे प्रयास की अवगति प्राप्त कर कहा–'आपके गांधीनगर-अहमदाबाद प्रवास से जिस वातावरण का निर्माण हुआ है, वह स्थायी बने।'

१० जुलाई को मुख्यमंत्री के सुरक्षा सलाहकार श्री के.पी.एस. गिल ने दर्शन किए। रथयात्रा के संदर्भ में संपादित हो रहे प्रयत्नों के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करते हुए कहा–'आचार्यजी ! आपका आगमन गुजरात के लिए वरदान बन गया है। आपके शांति-प्रयासों की सार्थक परिणति अवश्यंभावी है। आपने हमारा सिरदर्द मिटा दिया है। सर्वत्र सद्भाव प्रयासों की चर्चा है। अब मुझे विश्वास हो गया है कि रथयात्रा का कार्यक्रम अपूर्व शांति और सद्भाव के साथ सम्पन्न होगा।'

११ जुलाई को अनेक मुस्लिम एवं हिन्दू समाज के प्रतिष्ठित लोगों ने

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

दर्शन किए। रथयात्रा के संदर्भ में सम्पूर्ण अवगति दी। शांति बनाए रखने का संकल्प किया।

११ जुलाई का समय सम्पन्न हो रहा था। घड़ी में १२ जुलाई आ गई। मध्य रात्रि में एक व्यक्ति अहमदाबाद नगर-निगम के महापौर श्री हिम्मतसिंह पटेल का पत्र लेकर हमारे पास पहुंचा।

महापौर का अनुरोध

परम आदरणीय आचार्यश्री महाप्रज्ञजी !

सादर वंदन ! आप सुविदित हशो ज के प्रति वर्ष आषाढ़ी तीज ना दिवसे जमालपुर दरवाजा बहार आवेल सुप्रसिद्ध जगदीश मंदिरथी शहेरनी परिक्रमा ने रथयात्रा निकले छै। आ दिवसे म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन तरफथी आयोजन करवामा आवे छे । जगदीश मंदिरना महंतश्री तेमज रथयात्रानुं स्वागत करवानो अेक कार्यक्रम आगामी तारीख १२.७.२००२ शुक्रवार ना रोज सवारना ८.३० कलाके म्युनि. कॉर्पोरेशनना कम्पाउण्ड खाते राखवानो आवेल छे। आ स्वागत समारोहमां उपस्थित रही जगदीश मंदिरना महंतश्री, तेमज रथयात्रानुं स्वागत करवा आपने हार्दिक निमंत्रण पाडवुं छुं.

कुशल हशो,

(हिम्मतसिंह पटेल)

मेयर अने अध्यक्ष

अहमदाबाद शहेर एकता समिति

हम १४ किलोमीटर आगे जाने का निर्णय कर चुके थे। किन्तु महापौर की प्रार्थना तथा वातावरण की उपयोगिता को ध्यान में रखकर हमने वहां जाने की स्वीकृति दे दी।

गुजरात के इतिहास की यह उल्लेखनीय घटना थी। प्रातःकाल हम निर्दिष्ट स्थान पर पहुंचे । उस समय जगन्नाथ मंदिर के महंत, मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी, केन्द्रीय राज्यमंत्री श्री हरेन पाठक, आरोग्य मंत्री श्री अशोक भट्ट आदि भी वहां उपस्थित थे। सबसे वार्तालाप किया। मुख्यमंत्री श्री मोदी ने शांति-प्रयासों के लिए सरकार की ओर से आभार व्यक्त करते हुए कहा–'अहिंसा यात्रा ने जिस वातावरण का निर्माण किया है, वह गुजरात के इतिहास की उल्लेखनीय घटना बन गया है।'

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

रथयात्रा के प्रारंभ में मैं युवाचार्य महाश्रमण और अनेक मुनियों के साथ चल रहा था। मेरे साथ अनेक मुस्लिम भाई भी चल रहे थे। यह पहला अवसर था कि किसी जैन मुनि ने रथयात्रा में भाग लिया और शायद यह भी पहला अवसर था कि इतने मुस्लिम भाई साथ चले। अहिंसा की प्रतिष्ठा के क्षणों में वह सब कुछ हो सकता है जिसकी पहले हम कल्पना नहीं कर सकते।

इस प्रसंग में मैंने अनुभव किया कि महर्षि पतञ्जलि का यह सूत्र **'अहिंसाप्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैरत्यागः'** बहुत सार्थक है। यदि परस्पर दो व्यक्तियों अथवा दो समुदायों के बीच विश्वास का वातावरण पैदा किया जाए तो जटिल समस्या को सरल बनाया जा सकता है। संवादहीनता के अभाव में जो सन्देह पैदा होता है उसे मिलन और सहचिन्तन के द्वारा दूर किया जा सकता है–यह विश्वास पुष्ट हो रहा है। अहिंसा समवाय के पांच सूत्रों के प्रयोगों की सार्थकता का अनुभव हुआ। वे सूत्र हैं–

१. मिलन

२. सहासन

३. सह चिन्तन

४. सह निर्णय

५. क्रियान्विति।

इन सूत्रों के द्वारा बड़ी से बड़ी समस्या को सुलझाया जा सकता है।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

अहिंसा का नया आयाम

कणोदर का विद्यालय संस्कार केलवणी मण्डल द्वारा संचालित था। विद्यालय के सेक्रेटरी थे करीम भाई। बातचीत के दौरान उन्होंने बताया–हमारे गांव में ७०% मुसलमान हैं। पर यहां हिन्दू-मुसलमान दोनों शांति के साथ जी रहे हैं। गुजरात में होने वाली हिंसा का यहां कोई प्रभाव नहीं है।

हम चाहते हैं हिन्दुओं और मुसलमानों में परस्पर संवाद बना रहे। उन्होंने कुछ विशेष मुसलमानों के नाम सुझाए और कहा–उनसे बातचीत कर सांप्रदायिक सौहार्द का वातावरण बनाया जा सकता है। इस प्रसंग को मैंने अहिंसा की पृष्ठभूमि माना।

४ जून को सिद्धपुर में सर्वधर्म सद्भाव सम्मेलन का आयोजन हुआ। उसमें हिन्दू-मुस्लिम आदि सभी धर्मों के प्रतिनिधियों ने अहिंसा पर बल दिया। समाचार-पत्रों और दूरदर्शन तथा मीडिया के सभी साधनों ने उदात्त भावना के साथ प्रसारित किया। अब तक गुजरात में चारों ओर हिंसा का स्वर सुनाई दे रहा था। गुजरात के एक अंचल से अहिंसा का स्वर मुखर हुआ है। यह सुखद आश्चर्य है। इससे हिंसा का ताप अहिंसा की जलधारा से शांत हो सकेगा।

६ जून को गुजरात के मुख्यमंत्री के सुरक्षा सलाहकार श्री के.पी.एस. गिल हमारे पास आए। उन्होंने कहा-आचार्यजी ! इस साम्प्रदायिक दंगे में सैकड़ों परिवार बेघरबार हुए हैं। उनके पुनर्वास की व्यवस्था कैसे हो सकती है? मैं इस विषय में आपसे परामर्श करने आया हूं।

मैंने कहा–यदि उपयुक्त व्यक्तियों को यह दायित्व सौंपा जाए तो यह व्यवस्था हो सकती है।

इस विषय को भविष्य में चिंतन के लिए छोड़ दिया।

वे हिन्दू-मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई आदि के प्रतिनिधियों को अपने साथ

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

लाए। गुजरात में यह हमारा प्रथम सद्भाव सम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन में ''अहिंसा यात्रा'' की तरफ सबका ध्यान आकृष्ट हुआ।

मैंने श्री गिल को सुझाव दिया कि पुलिस के अन्य प्रशिक्षणों के साथ पुलिसकर्मियों को अहिंसा और शांति की कार्यप्रणाली का भी शिक्षण दिया जाना चाहिए। बार-बार चलने वाले साम्प्रदायिक वैमनस्य का समाधान खोजने के लिए अल्पकालीन और दीर्घकालीन दोनों प्रकार की रणनीति के विषय में चिंतन आवश्यक है।

हिंसा पाप है, अहिंसा धर्म है। हिंसा करने वाला नरक में जाता है और अहिंसा करने वाला स्वर्ग में। यह अहिंसा का सैद्धान्तिक आधार है। अहिंसा यात्रा में हमने अहिंसा को व्यावहारिक आधार पर प्रस्तुत किया। हम गुजरात के छोटे-छोटे गांवों में पदयात्रा कर रहे थे।

हमने गांव की हिन्दू-मुस्लिम जनता से पूछा–'क्या तुम गरीबी मिटाना चाहते हो?'

जनता का स्वर–'हां, अवश्य ही गरीबी मिटाना चाहते हैं।'

मैंने कहा–'यदि तुम गरीबी मिटाना चाहते हो तो शांति से जीना सीखो।'

मैंने पूछा–'क्या तुम विकास करना चाहते हो?'

उत्तर मिला–'हां विकास जरूरी है, हम विकास करना चाहते हैं।'

मैंने कहा–'यदि तुम विकास करना चाहते हो तो लड़ाई-झगड़ा मत करो। एक बार लड़ाई-झगड़ा होता है तो वर्षों तक व्यापार की गति मंद हो जाती है, आर्थिक विकास की गति भी धीमी हो जाती है।'

गरीबी को मिटाना है, आर्थिक विकास करना है, सुख-शांति से जीना है तो जाति और संप्रदाय के नाम पर कभी भी झगड़ा मत करो।

ग्रामीण लोगों ने अहिंसा के व्यावहारिक आधार को बहुत महत्त्व दिया और संकल्प किया कि हम भविष्य में जाति और सम्प्रदाय के आधार पर झगड़ा नहीं करेंगे।

हम २ जून को पालनपुर पहुंचे। अभिनन्दन के समय हिन्दू समाज और मुस्लिम समाज के प्रमुख नेता उपस्थित थे। अभिनन्दन की आयोजना में तेरापंथ समाज तथा मुसाफिर पालनपुरी, प्रो.ए.सिंघे की प्रमुख भूमिका रही। उस समारोह में गुजरात की शिक्षामंत्री आनन्दी बहन पटेल आई। उन्होंने

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

कहा-''एक वर्ष पूर्व हमने लाडनूं पहुंचकर पूज्यवर से गुजरात पदार्पण की विनती की थी। आज आपको गुजरात की धरती पर देखकर मैं अत्यंत उल्लसित हूं। आज गुजरात में जो अविश्वास का वातावरण बना है, वह शीघ्र समाप्त हो और विश्वास का नया वातावरण निर्मित हो, इसके लिए आपश्री के मार्गदर्शन की आवश्यकता है।''

इस कार्यक्रम में नवभारत टाइम्स के संपादक डॉ. विश्वनाथ सचदेव, राज्यसभा सदस्य जयन्तीभाई बारोठ भी उपस्थित थे।

विश्वनाथ सचदेव ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति में कहा-''आज गुजरात सम्पूर्ण विश्व की निगाहों का केन्द्र बन गया है। यहां की धरती पर जो हिंसक घटनाएं हुई हैं, उसने इस धरती के गौरव को कम किया है। हिंसा को कभी भी हिंसा से समाप्त नहीं किया जा सकता।''

''हिंसा को समाप्त करने के लिए हमें अपने भीतर की शांति को जगाना होगा। भीतर की शांति और अहिंसा को प्रकट करने के लिए आचार्य महाप्रज्ञ जैसे महान धर्मगुरुओं के मार्गदर्शन की नितान्त अपेक्षा है।''

श्री बारोठ ने राज्यसभा के संदर्भ के साथ अपनी बात कही–''राज्यसभा में हमारा बहुत कम समय शांति से निकलता है। आज हम गुरुदेव के पास अहिंसा और शांति की बात सुनने के लिए आए हैं। आज संपूर्ण विश्व में हिंसा का जो माहौल है, उसमें आचार्य महाप्रज्ञ का अहिंसा का संदेश ही नई राह दिखा सकता है।

पालनपुर में अहिंसा यात्रा के आयोजक युसुफ ने युनीवार्त्ता को बताया–'हम लोग विश्वशांति और अहिंसा का संदेश देने वाली अहिंसा यात्रा से जुड़कर अपने आपको खुदकिस्मत समझते हैं।'

हम १४ जून को ऊंझा पहुंचे। वर्तमान स्थिति को ध्यान में रखकर मध्याह्न में एक गोष्ठी का आयोजन किया गया। उसमें गुजरात के अनेक स्थानों के प्रमुख व्यक्तियों ने भाग लिया। हिन्दू-मुस्लिम और ईसाई समाज के नेता चर्चा में सहभागी बने।

संजय भाई का अभिमत था–''अहिंसा यात्रा के द्वारा यह प्रयत्न होना चाहिए जिससे अहिंसा जीवन व्यवहार में आ सके।''

फादर याकुब भाई मेकबान के चिन्तन का सार यह है–''हिंसा से अशांति बढ़ रही है, इसलिए अहिंसा पर व्यापक चिंतन होना चाहिए।''

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

राहत कैम्प के मुस्लिम प्रतिनिधि दाउद भाई ने कहा–'हिंसा के कारण परिवार अस्त-व्यस्त हो रहे हैं।'

सिंधी समाज के सुरेशभाई ने कहा–'आज अहिंसा के प्रशिक्षण की आवश्यकता है।'

गुजराती साहित्यकार रतिलाल भाई ने कहा–'हिंसा की तरह अहिंसा की भी एक व्यूह-रचना होनी चाहिए, जिससे अहिंसा के परिणाम सामने आ सके।'

डॉ. रजाक ने अपने अनुभव के आधार पर कहा–'डॉक्टर के सामने कोई जाति भेद और सम्प्रदाय भेद नहीं होता। वैसे ही संतों के सामने भी कोई जाति भेद और सम्प्रदाय भेद नहीं होता। मैं विश्वास करता हूं कि यह अहिंसा यात्रा बढ़ती हुई हिंसा को रोकने में बहुत उपयोगी होगी। यह संयोग की बात है कि हिंसा के वातावरण में अहिंसा यात्रा की उपयोगिता सबके मस्तिष्क का स्पर्श कर रही है।'

गुजरात राज्य में अहिंसा यात्रा के प्रति आकर्षण पैदा हो रहा था। साम्प्रदायिक विद्वेष ने इस यात्रा को और अधिक प्रासंगिक बना दिया। मीडिया इस कार्य में पूरा सहयोग कर रहा था । पालनपुर प्रवास में वार्त्ता द्वारा यह रिपोर्ट प्रसारित की गई–

''पिछले तीन माह से साम्प्रदायिक हिंसा की आग में जल रहे गुजरात समेत समूचे देश में शांति और अहिंसा का संदेश देने के लिए आचार्य तुलसी के उत्तराधिकारी आचार्य महाप्रज्ञ ८३ वर्ष की उम्र में भी रोजाना १४ किलोमीटर की पदयात्रा करते हैं।''

अब तक वे १२०० किलोमीटर की पदयात्रा कर चुके हैं। उन्होंने अपनी यात्रा पिछले वर्ष दिसम्बर में राजस्थान के चूरू जिले से शुरू की थी और तीन साल के भीतर वह मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात और राजस्थान समेत अन्य प्रदेशों की पदयात्रा कर शांति और अहिंसा का संदेश देंगे।

गुजरात के महेसाणा में अहिंसा विश्वविद्यालय स्थापित करने की योजना में प्रमुख भूमिका निभाने वाले आचार्य महाप्रज्ञ की अहिंसा यात्रा में हिन्दू, मुसलमान, जैन और अन्य धर्म के लोगों से लेकर राजनीतिज्ञ, समाजसेवक और आम आदमी बड़ी संख्या में शामिल हो रहे हैं।

पाकिस्तान की सीमा से सटे बनासकांठा जिले की इस तपती गर्मी

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

और लू के थपेड़ों के बीच अनेक साधुओं और साध्वियों के साथ शांति की क्रांति के लिए निकले आचार्य महाप्रज्ञ की मुस्कुराहट और मुक्त हंसी लोगों की थकान और गर्मी के अहसास को भुला देती है।'

अनेक प्रबुद्ध लोग गुजरात में हो रही हिंसा की व्यथा का अनुभव कर रहे थे। वे किसी आश्वासन की खोज में थे। अहिंसा यात्रा में उन्होंने आश्वासन की अनुभूति की। इसका संकेत दे रहा है नवभारत टाइम्स के संपादक विश्वनाथ सचदेव का पत्र–

श्रद्धेय आचार्य महाप्रज्ञजी !

जब से राजकुमार पुगलिया ने यह बतलाया कि अहिंसा यात्रा के दौरान आप गुजरात में प्रवेश कर गए हैं, मेरा मन आपको पत्र लिखने का कर रहा था। अहिंसा यात्रा के माध्यम से आप देश और समाज में एक अहिंसक जीवन प्रणाली का संदेश पहुंचा ही रहे हैं, निश्चित रूप से इसका सार्थक प्रभाव समाज पर पड़ेगा।

आज गुजरात में जो कुछ हो रहा है वह राष्ट्र के समूचे नेतृत्व, जिसमें सामाजिक एवं धार्मिक नेतृत्व भी सम्मिलित है, के लिए भी एक चुनौती है। आप संयोग से गुजरात में उस समय पहुंच रहे हैं, जब वहां साम्प्रदायिकता की झुलसाने वाली आंधी चल रही है। मुझे लगता है आप जैसे संत पुरुष ही इस समय गुजरात की जनता को वह दे सकते हैं, जो इस आंधी के प्रभाव को समाप्त कर सके। राजनेताओं ने हमें विफल ही नहीं गुमराह भी किया है, इसीलिए आज ऐसे नेतृत्व की आवश्यकता एवं अपेक्षा है जो देश को किसी सार्थक राह पर पहुंचा सके। मुझे लग रहा है अहिंसा यात्रा के दौरान इस समय गुजरात में होना यदि संयोग भी है तब भी असीमित संभावनाओं से भरा है। आप जैसे संत ही गुजरात के घावों को आज सहला सकते हैं। धर्मान्धता की आंधी को विफल कर भारतीय समाज को संकल्पना दे सकते हैं।

मुझे विश्वास है, आप स्वयं भी इसी दिशा में सोच रहे होंगे। मुझे यह भी विश्वास है कि एक बेहतर फल की दिशा में किए गए आपके प्रयास मात्र गुजरात को ही नहीं, समूचे देश को मानवता का ऐसा संदेश देंगे, जो सांप्रदायिकता की आग में झुलसते समाज को करुणा और मैत्री की ठण्डी बयार दे सकेगा।

स्नेहाधीन

विश्वनाथ सचदेव

संपादक नवभारत टाइम्स मुम्बई

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

हमने चिंतन किया कि भारत की केन्द्रीय सरकार मजबूत हो तो बढ़ती हुई हिंसा को रोकने में वह सफल हो सकती है। राष्ट्र की बड़ी पार्टियां राष्ट्रीय मुद्दों पर सहमति का वातावरण बनाए तो हिंसा को जन्म देने वाले अनेक कारणों का निराकरण किया जा सकता है। इस चिंतन के आधार पर सर्वप्रथम दो बड़े राजनैतिक दलों (कांग्रेस और भाजपा) के प्रतिनिधि परस्पर मिलकर बातचीत करे तो चिंतन को आगे बढ़ाया जा सकता है। अहिंसा यात्रा के कार्यकर्ताओं ने शिवराज पाटिल को निमंत्रण दिया और वे २० जून को बीजापुर पहुंच गए। भाजपा का प्रतिनिधि किसी कारणवश नहीं आ सका, इसलिए चिंतन आगे नहीं बढ़ा।

अहिंसा के विकास की समस्या पर चर्चा हो रही थी। उस चर्चा को आगे बढ़ाते हुए मैंने कहा–हिंसा का विकास जितनी तेजी से हो रहा है उतनी तेजी से अहिंसा का विकास नहीं हो रहा है। उसके चार हेतु हैं–

१. हिंसा की रणनीति है, अहिंसा की कोई रणनीति नहीं है।

२. हिंसा की व्यूह-रचना है, अहिंसा की कोई व्यूह-रचना नहीं है।

३. हिंसा का नेटवर्क है, अहिंसा का कोई नेटवर्क नहीं है।

४. हिंसा का प्रशिक्षण है, अहिंसा का कोई प्रशिक्षण नहीं है।

अहिंसा यात्रा अहिंसा के विषय में चिंतन का एक अनायोजित और अकल्पित मंच बन गया। इस मंच के माध्यम से अनेक विचारक व्यक्तियों का चिंतन हमें प्राप्त हो रहा था। २८ जून को हम गांधीनगर पहुंचे। अनगिन व्यक्ति अगवानी में आए। उस समय गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री अमरसिंह चौधरी ने अपना विचार प्रस्तुत किया–''आज हिंसा का प्रभाव बढ़ रहा है, उसे रोकने के लिए शिक्षा के साथ अहिंसा को जोड़ना आवश्यक है।''

गुजरात यात्रा की चर्चा के प्रसंग में मैंने बतलाया–हमने गांवों में साम्प्रदायिक सौहार्द और सद्भाव देखा। सभी वर्ग और जाति के लोगों ने हमारा स्वागत किया। रात्रि के समय गुजरात के राज्यपाल सुन्दरसिंह भंडारी से गुजरात की समस्या पर विचार-विमर्श किया। उनके मन में भी गुजरात की हिंसात्मक घटना के प्रति अव्यक्त वेदना देखने को मिली।

तीन मास की गुजरात यात्रा के बाद हमने गुजरात की राजधानी प्रेक्षा विश्व भारती (कोबा) में प्रवेश किया। मैंने अनुभव किया कि विगत महीनों में अहिंसा के विषय में जितनी चर्चा हुई, उसका संकलन किया जाए तो

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

एक विशाल ग्रंथ बन सकता है। इसके साथ यह भी अनुभव किया कि अहिंसा ग्रंथों और पन्थों से निकलकर जीवन-व्यवहार में आए तो हिंसा से उपजने वाली समस्याओं का समाधान हो सकता है। आज अहिंसा का व्यवहार स्थविर हो गया है और वह लड़खड़ाला हुआ लाठी के सहारे चल रहा है। हमारा लक्ष्य है कि उसमें पुनः यौवन की स्फूर्ति आए।

मैंने अनुभव किया-''अहिंसा का दुर्बल पक्ष यह है कि उसके पास समर्पित कार्यकर्त्ता नहीं है, जबकि हिंसा के पास समर्थ कार्यकर्ताओं की भीड़ है, जो अपना घरबार छोड़कर मरने के लिए तैयार है। हिंसा में विश्वास करने वाले हिंसक घटनाओं के लिए नई-नई योजना बनाते हैं, जबकि अहिंसा में विश्वास करने वाले उसके विकास के लिए न बहुत सोचते हैं और न कोई नई योजना बनाते हैं।''

अहिंसा का आध्यात्मिक पक्ष है–आवेश नियंत्रण। अहिंसा का व्यावहारिक पक्ष है–सामुदायिक चेतना का विकास। उसका आध्यात्मिक पक्ष जितना सुदृढ़ होगा, उतना ही शक्ति का विकास होगा। उसका व्यावहारिक पक्ष जितना पुष्ट होगा, संबंधों में समरसता रहेगी, व्यक्ति शांति के साथ रह सकेगा। मैंने सुना है–यहां अहिंसा का विश्वविद्यालय बन रहा है। मैं चाहता हूं इस विश्वविद्यालय में कुछ ऐसा कार्य हो कि गुजरात पुनः पूरे विश्व में अहिंसा का निर्यात कर सके।

आज अहिंसा को व्यवहार के स्तर पर लाने की अधिक जरूरत है, इसलिए जरूरत है कि धार्मिक लोगों में भी सहिष्णुता नहीं है। वर्तमान युग की बहुत बड़ी समस्या है–असहिष्णुता। केवल राजनैतिक दल ही नहीं, धार्मिक दल भी एक-दूसरे को सहन नहीं करते। बहुधा यह असहिष्णुता ही असामञ्जस्य अथवा टकराव का निमित्त बन जाती है। जैन धर्म ने वीतरागता का दर्शन दिया, एक-दूसरे के प्रति सद्भावना और सहानुभूति की प्रेरणा दी।

अब अपेक्षा है धार्मिक व्यक्ति सर्वप्रथम आत्मनिरीक्षण करे। वह अपने आपसे ही कुछ प्रश्न पूछे। मुझे धर्म की साधना करते इतना समय हो गया है, मेरा क्रोध शांत हुआ या नहीं? अहंकार, माया, ईर्ष्या और लोभ का अल्पीकरण कितना हुआ है? उपशम की साधना कितनी आगे बढ़ी है? आज जरूरत है कि धर्म को एकमात्र रूढ़ि के रूप में स्वीकार न करें। धर्म हमारी जीवन शैली है। उसे वैज्ञानिक ढ़ंग से समझने का प्रयास किया जाए।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

अहिंसा यात्रा के दौरान हमने अहिंसा प्रशिक्षण के विषय में गंभीरता से चिंतन किया। संस्कृत कवि ने देशाटन को चातुर्य का मूल बताया है। यात्रा से चिंतन का चातुर्य बढ़ा। इस कथन में मुझे कोई अतिशयोक्ति नहीं लगती। मैं अपने वक्तव्य के एक प्रसंग द्वारा पुष्टि करना चाहता हूं।

अनेक विचारक व्यक्ति अहिंसा यात्रा की तुलना महात्मा गांधी की डांडी यात्रा से कर रहे हैं। वर्तमान को अतीत के साथ जोड़ने का हमारा कोई प्रयत्न नहीं था। वर्तमान की समस्या को अतीत के संदर्भ में देखा भी नहीं जा सकता। एक विचित्र संयोग का उल्लेख करना इतिहास के एक पृष्ठ को पढ़ने जैसा लग रहा है।

प्रेक्षा विश्व भारती से प्रस्थान कर हम अहमदाबाद के उपनगरों में घूमे। मणिनगर से विहार कर हम असलाली ग्राम में आए। प्राथमिक पाठशाला में ठहरे। मैं उसके एक कक्ष में बैठा था। अतीत वर्तमान होकर मेरे सामने आ गया। मुझे पता चला कि महात्मा गांधी ने दांडी यात्रा यहां से प्रारंभ की थी। साबरमती आश्रम से प्रस्थान किया। असलाली गांव आए और इसी प्राथमिक शाला और इसी कमरे में, जिस कमरे में बैठा हूं, विश्राम किया था। यह हॉल ''गांधी हॉल'' के नाम से आज भी प्रसिद्ध है। अतीत जैसे वर्तमान हुआ तो अनेक दृश्य मेरे सामने आ गए। अनेक प्रश्न भी मेरे सामने उभरकर आ गए।

महात्मा गांधी ने अहिंसा के लिए जो किया था, वह विलक्षण था। लोग कहते हैं उसका क्या हुआ, जो गांधी ने किया था? मनुष्य का स्वभाव है विस्मृति। वह भूल जाता है। यदि विस्मृति नहीं होती और महात्मा गांधी के कार्य को निरन्तर आगे बढ़ाया जाता तो शायद दुनिया में एक चमत्कार हो जाता, हिंसा की बाढ़ रुक जाती। किन्तु कठिनाई है कि आदमी भूल जाता है। महात्मा गांधी थे, तब तक एक दृश्य दिखाई दे रहा था। उनके आभामण्डल ने लोगों को आकृष्ट किया। जनता उनके पीछे-पीछे घूमती थी। उनके चले जाने के बाद स्थिति में परिवर्तन आ गया। त्याग, तपस्या और संयम की बात गौण हो गई, सत्ता का आकर्षण शिरोमणि बन गया और लगा कि महात्मा गांधी भुलाए जा रहे हैं।

हम अहिंसा यात्रा के दूसरे चरण की यात्रा शुरू कर रहे हैं। अहमदाबाद तक एक दीर्घकालीन पड़ाव सम्पन्न हुआ। अब दूसरा चरण आगे बढ़ रहा है। संयोग की बात है कि आज हम उसी गांव में, उसी कक्ष में और उसी

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

पाठशाला में ठहरे हुए हैं। आज भी मैं अनुभव करता हूं कि महात्मा गांधी ने जो अहिंसात्मक प्रतिकार का सूत्र दिया था, महात्मा गांधी ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन का जो सूत्र दिया था, महात्मा गांधी ने जो ट्रस्टीशिप का सूत्र दिया था, यदि उन सूत्रों की निरन्तरता रहती तो आज समाज बदलता हुआ दिखाई देता। दुनिया का नियम है कि धारा बने बिना प्रवाह नहीं होता। धारा चलती रहे तो अनेक देशों को, प्रदेशों को अपने जल से सिंचन देती रहती है और जल स्तर को ऊपर बनाए रखती है। धारा का प्रवाह अवरुद्ध हो जाता है तो जल की समस्या भी पैदा हो जाती है, कुओं का पानी भी नीचे चला जाता है, सिंचाई की बात भी नहीं होती।

आज जरूरत है प्रवाह की, आज जरूरत है धारा की। इसी चिन्तन के आधार पर हमने अहिंसा प्रशिक्षण को प्राथमिकता दी है। वह धारा, प्रवाह प्रशिक्षण द्वारा ही स्थायी रह सकता है, उसके बिना संभव नहीं है। जब तक मानवीय मस्तिष्क का परिष्कार नहीं किया जाता, दृष्टिकोण परिवर्तन का अभ्यास नहीं किया जाता, जीवन शैली का परिवर्तन नहीं किया जाता और जीवन की प्राथमिक आवश्यकता रोटी की पूर्ति नहीं की जाती तब तक अहिंसा तेजस्वी बने अथवा अहिंसा का प्रवाह निरन्तर चलता रहे, यह कम संभव लगता है।

अहिंसा प्रशिक्षण में हमने इन सबका समावेश किया है कि मनुष्य का आन्तरिक परिवर्तन हो, उसका मस्तिष्कीय परिवर्तन हो। वह प्रशिक्षण द्वारा हो, वह प्रशिक्षण हमारी शिक्षा के साथ जुड़े और वह व्यापक स्तर पर हो। मुझे प्रसन्नता है कि आज उस कक्ष में बैठे-बैठे हम चिन्तन कर रहे हैं और अपनी बात कह रहे हैं, जिस कक्ष का ऐतिहासिक महत्त्व है। आश्चर्य इस बात का है कि इतना ऐतिहासिक महत्त्व का स्थल पहला पड़ाव है, जिसके बारे में कोई भी जानकारी हमें नहीं है। विद्यालय का विशेष विकास हुआ दिखाई नहीं दिया। यदि यही स्थान सिक्ख पंथ के किसी गुरु द्वारा स्पृष्ट होता तो पता नहीं वो लोग क्या कर देते। जहां-जहां गुरु गए हैं, जिस-जिस स्थान का गुरु ने स्पर्श किया है, वहां अद्भुत विकास कर दिया है।

शायद गांधी नहीं चाहते थे कि गांधीवाद चले और उनके साथ रहने वाले भी नहीं चाहते थे कि गांधीवाद चले। वाद न चले पर परम्परा तो चले। जो सूत्र दिए थे, वे तो चलते रहें। उन्हें चलाने के लिए कुछ बाहरी आकार-प्रकार भी देना होता है। मैं अनुभव करता हूं कि आचार्य तुलसी ने

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

सम्प्रदायातीत धर्म का स्वर उदात्त किया था फिर भी उनकी परम्परा जीवित है। परम्परा है तो स्वर को बढ़ाया जा सकता है। परम्परा को मैं गलत नहीं मानता। यह भी एक सचाई है। साम्प्रदायिक अभिनिवेश नहीं आए, कट्टरता नहीं आए, यह ठीक है, लेकिन परम्परा ही नहीं रहे तो एक कमी महसूस होती है और आज भी हो रही है।

हमने महात्मा गांधी के अहिंसात्मक प्रतिकार के सूत्र को प्रयोग में लाने का प्रयत्न किया है। सामान्यतः आदमी प्रतिशोध लेता है। प्रतिशोध की भावना होती है और वह प्रतिशोध की भावना प्रतिक्रियात्मक हिंसा को जन्म देती है। अगर प्रतिशोध की जगह प्रतिकार की भावना का प्रयोग किया जाता तो हिंसा को बढ़ने का मौका कम मिलता। किन्तु प्रशिक्षण के अभाव में लोग उसका महत्त्व कम समझ पा रहे हैं, उसका मूल्यांकन नहीं कर पा रहे हैं।

मैं चाहता हूं कि आज महात्मा गांधी द्वारा पवित्र किए हुए स्थल और कक्ष को फिर से लोग एक इतिहास की पुनरावृत्ति के रूप में देखें और अहिंसात्मक प्रतिकार को आगे बढ़ाएं तो हमारे लिए भी अच्छी बात है। जितने भी गांधी के सहभागी रहे हैं या गांधी के नाम से जो भी संस्थाएं चल रही हैं, जो कार्य चल रहा है, उन सबमें गांधी के सूत्रों के पुनरुज्जीवन की चेतना जागे और उस कार्य को आगे बढ़ाएं तो मेरा विश्वास है कि बढ़ती हुई हिंसा पर अंकुश लगाया जा सकेगा और अहिंसक वातावरण के निर्माण में, समाज को अहिंसोन्मुखी बनाने में हम सक्षम हो सकेंगे।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

अहिंसा की मर्यादा

एक ओर अहिंसा यात्रा दूसरी ओर जिज्ञासा, आशंका और संदेह की मानसिकता। क्या अहिंसा के द्वारा हम राष्ट्र की सुरक्षा कर सकते हैं? क्या अहिंसा के द्वारा हम आक्रमण का प्रतिकार कर सकते हैं? क्या अहिंसा के द्वारा हम अपने अस्तित्व की सुरक्षा कर सकते हैं? ये प्रश्न अस्वाभाविक नहीं हैं। सानान्य आदमी हिंसा और अहिंसा शब्दों से परिचित है। उनकी व्याख्या से परिचित नहीं है, इसलिए हिंसा से संबद्ध प्रश्नों का होना अस्वाभाविक नहीं है।

मुंबई में हमारा प्रवास हो रहा था। आर.एस.एस. के प्रमुख सुदर्शनजी और उनके अनेक कार्यकर्ता उपस्थित थे। हिंसा के विषय में चर्चा हो रही थी मुझे लगा कि अहिंसा की उपयोगिता के बारे में संदेह के कण प्रकीर्ण हो रहे हैं। जिस सिद्धान्त के बारे में हमारी धारणा स्पष्ट नहीं होती, उसका आचरण भी नहीं होता।

अहिंसा यात्रा के प्रथम वर्ष में हम जोधपुर में थे। अहिंसा यात्रा का कार्यक्रम निर्धारित था। लक्ष्मीमल्ल सिंघवी और यशवन्त सिन्हा परिषद में उपस्थित हुए। सिंघवीजी ने कहा–अहिंसा के बारे में कुछ स्पष्टता आवश्यक है। हिंसा के बिना हम अपने अस्तित्व की रक्षा नहीं कर सकते। फिर इतना बल क्यों दिया जाए? इस प्रश्न के समाधान में मैंने जो कहा, उसकी पुनरावृत्ति प्रवचन में भी की। मैंने कहा-जैनाचार्यों ने हिंसा और अहिंसा का बहुत व्यावहारिक दृष्टि से विवेचन किया। वह अहिंसा के विषय में उपजने वाली आशंकाओं को दूर करने में बहुत आवश्यक है।

१. आरंभजा हिंसा

पहली सचाई यह है कि हिंसा जीवन के साथ जुड़ी हुई है। एक सामाजिक प्राणी के लिए पूर्ण अहिंसा शक्य नहीं है, इसलिए संभव भी नहीं है। असंभव बात का प्रसार भ्रांति पैदा करता है। उससे कोई लाभ नहीं होता।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

गृहस्थ के जीवन में हिंसा के अनेक क्षेत्र हैं। पहला क्षेत्र है–रोटी-पानी और रोटी-पानी के लिए कृषि आदि का व्यवसाय। रोटी-पानी जीवन की प्रथम आवश्यकता है। उसे गृहस्थ छोड़ नहीं सकता। वह हिंसा की अनिवार्यता का प्रथम चरण है। इस हिंसा का जैन-परिभाषा में नाम है–आरंभजा हिंसा।

एक गृहस्थ के लिए इस हिंसा को छोड़ना शक्य नहीं है। इस सचाई को स्वीकार कर हमें अहिंसा की बात करनी चाहिए।

२. विरोधजा हिंसा

हिंसा का दूसरा क्षेत्र है-सुरक्षा। सब लोग आक्रामक मनोवृत्ति वाले नहीं होते, यह सचाई है और यह भी सचाई है कि समाज में अथवा दुनिया में आक्रामक मनोवृत्ति वाले लोग भी विद्यमान है। कुछ लोग दूसरों के स्वत्व पर आक्रमण करते रहते हैं। एक गृहस्थ आक्रमण की स्थिति में अपने स्वत्व की रक्षा के लिए प्रत्याक्रमण करता है। इस हिंसा का नाम विरोधजा अथवा प्रतिरोधात्मक हिंसा है।

वि. सं. २०२२, सन् १९६५ आचार्यश्री तुलसी, हिन्दू महासभा नई दिल्ली में चातुर्मास कर रहे थे। हिन्द-पाक युद्ध चल रहा था। दिल्ली युनिवर्सिटी के कुछ प्रोफेसर आए। वे बोले–आचार्यजी! आप अहिंसा में विश्वास करते हैं। युद्ध में बहुत हिंसा होती है। आपको कैसा लग रहा है?

आचार्यवर ने एक वस्त्र खण्ड को अपने हाथ में लिया। उसके दोनों किनारों पर अंगुली रखकर बोले-''इसका एक किनारा परिग्रह है और दूसरा किनारा हिंसा है। यदि आप परिग्रह रखते हैं तो आपके लिए हिंसा की अनिवार्यता हो जाती है।'' आचार्यवर ने वस्त्र खण्ड के एक किनारे से अंगुली हटाते हुए कहा-''यदि आप परिग्रह को छोड़ते हैं फिर दूसरा किनारा अपने आप छूट जायेगा। आपके लिए हिंसा की अनिवार्यता नहीं होगी।''

यदि अनिवार्य और वार्य अथवा आवश्यक और अनावश्यक हिंसा का विवेक करें तो अहिंसा की मर्यादा को समझने में कोई कठिनाई नहीं होगी।

३. संकल्पजा हिंसा

संकल्प की अनेक कोटियां हैं। कुछ व्यक्तियों में दूसरों पर अधिकार जमाने की मनोवृत्ति है। कुछ व्यक्तियों में दूसरों के स्वत्व को हड़पने की मनोवृत्ति है। इस मनोवृत्ति से की जाने वाली हिंसा संकल्पजा हिंसा है। न आजीविका का प्रयोजन है, न सुरक्षा का प्रश्न, किन्तु क्रूरता, क्रोध, लोभ,

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

अहंकार आदि मनोवृत्तियों के कारण व्यक्ति हिंसा करता है। यह संकल्पजा कोटि की हिंसा है। एक सामाजिक प्राणी के लिए अहिंसा व्रत का अर्थ है-संकल्पजा हिंसा की वर्जना। वह अहिंसा की यात्रा इसी रेखा से प्रारंभ करता है। आरंभजा और प्रतिरोधजा हिंसा में भी आवश्यक और अनावश्यक का विवेक करता है।

हिंसा के इस विवेचन के बाद मुझे लगा-अहिंसा के विषय में उपजने वाली आशंकाओं और संदेहों का समाधान हो गया।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

हिंसा की उष्मा : अहिंसा की बूंदें

९ मई २००३ मुंबई से प्रस्थान कर हम गुजरात जा रहे थे। १८ मई को हम महावीर धाम पहुंचे। अकस्मात् एक भीमकाय व्यक्ति आया और विनम्र स्वर में बोला–गुरुजी आपने मुझे पहचान लिया? मैं कांदीवली में आपके संपर्क में आया था। आपके आभामण्डल और अहिंसा ने मुझे प्रभावित किया। मैं अपराध की गतिविधि से जुड़ा हुआ था। पता नहीं कैसे मन बदला और मैंने निश्चय कर लिया–अब मैं अपराध की प्रवृत्ति में नहीं जाऊंगा। अभी-अभी मुझे एक लाख रुपयों की सुपारी मिल रही थी, मैंने उसे अस्वीकार कर दिया। अब मैं यह आशीर्वाद लेने आया हूं कि मेरा निश्चय कायम रहे और मैं किसी अपराध के जाल में न जाऊं।

मैंने एक सचाई को देखा। हिंसा का स्वर बार-बार सुनाई देता है। इसलिए हिंसा का बढ़ना स्वाभाविक हो गया है। यदि प्रतिरोधक शक्ति का निर्माण किया जाए, अहिंसा का स्वर बार-बार उच्चरित होता रहे, उससे जनता का मस्तिष्क झंकृत होता रहे तो हिंसा की निरकुंशता समाप्त हो सकती है।

अहिंसा यात्रा में इस सचाई का अनुभव एक बार नहीं, अनेक बार किया। केवल मैंने ही नहीं किया, उन लोगों ने भी किया जिनका चिंतन हिंसा के परिपार्श्व में चलता था। जो लोग समस्या का समाधान हिंसा में खोजते थे, उन्होंने इस भाषा में सोचना शुरू किया कि हिंसा और विकास दोनों साथ नहीं हो सकते। हिंसा, हत्या और आतंक की छाया में विकास की गति मंद हो जाती है। शांति के वातावरण में विकास की रफ्तार तेज हो जाती है।

६ अप्रैल को संयुक्त राष्ट्र संघ के सूचना केन्द्र के निर्देशक श्री फियाडोर स्टार सेविक आए और बोले-''आचार्यजी ! आप अहिंसा और शांति का कार्य कर रहे हैं। यह संयुक्त राष्ट्र संघ का मुख्य उद्देश्य है। आप संयुक्त राष्ट्र संघ के मुख्यालय न्यूयार्क में आएं। उसके मंच से पूरे विश्व को संबोधित

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

करें। आपने अहिंसा प्रशिक्षण का जो कार्य शुरू किया है, उसमें मैं अपना पूर्ण सहयोग दूंगा।''

मानवीय एकता

अहिंसा यात्रा के साथ मानवीय एकता का स्वर सैकड़ों-सैकड़ों बार अनुगुंजित हो रहा है। हम एक गांव से दूसरे गांव में जाते तो राजपथ के पार्श्ववर्ती गांव के लोग राजपथ पर इकट्ठे हो जाते। युवाचार्य महाश्रमण उनको अहिंसा के चार सूत्रों का संबोध देते–

१. मैं मानवीय एकता में विश्वास करता हूं।

२. मैं जाति और सम्प्रदाय आदि के आधार पर लड़ाई-झगड़ा नहीं करूंगा। घर में भी झगड़ा नहीं करूंगा, शांति से रहूंगा।

३. मैं जीवन व्यवहार में यथासंभव ईमानदारी का पालन करूंगा।

४. मैं नशामुक्त रहने का अभ्यास करूंगा।

मानवीय एकता की अवधारणा आबाल-वृद्ध में मुखरित हो रही है। २४ फरवरी,२००३ की सन्ध्या के समय रिपब्लिकन पार्टी के अध्यक्ष श्री रामदास आठवलै हमारे पास आए। वार्तालाप के प्रारंभ में उन्होंने अपना अनुभव बताया–'अहिंसा यात्रा के माध्यम से मानवीय एकता की अवधारणा पुष्ट हो रही है। यह हमारे राष्ट्र के लिए शुभ-भविष्य का संकेत है। जिस समाज में जात-पांत और ऊंच-नीच की भेदरेखा है, वह समाज और राष्ट्र दुर्बल हो जाता है।

आर्थिक विषमता भी राष्ट्र की प्रगति में बाधक बन रही है। कुछ लोगों के पास अर्थ का संग्रह बहुत है और कुछ लोग गरीब हैं, भूखे हैं। अहिंसा यात्रा के द्वारा इस समस्या की ओर ध्यान आकृष्ट करना चाहिए।'

मैंने कहा–''अहिंसा यात्रा के द्वारा भाईचारे का वातावरण बन रहा है। हम आर्थिक विषमता को अहिंसा के विकास में बहुत बाधक मान रहे हैं। इसलिए संतुलित अर्थव्यवस्था के विचार को आगे बढ़ाने का प्रयत्न कर रहे हैं।''

२१ मार्च,२००३ को हम सलफिस्टन स्थित जी.एम.जैन होस्टल की तरफ जा रहे थे। थोड़ी दूरी पर ही रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया के महाराष्ट्र शाखा के अध्यक्ष तथा भारतीय चर्मकार समाज ट्रस्ट के अध्यक्ष दलित मित्र चंद्रकांत काम्बले ने हमारी अगवानी की। उन्होंने कहा-अहिंसा

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

यात्रा के आगमन के अवसर पर आपके चरणरज से हमारे इस केन्द्र को पवित्र करें'' हम उनके कम्प्यूटर सेन्टर के लघु कक्ष में गए। काम्बले ने भाव-विभोर होकर यह संकल्प व्यक्त किया–मैं और मेरा पूरा समाज अहिंसा यात्रा को सफल बनाने का प्रयत्न करते रहेंगे।

हम आगे बढ़ रहे थे। रिपब्लिकन पार्टी के युवा कार्यकर्ता बैण्ड बजाते हुए हमारे साथ चल रहे थे। चारों ओर बौद्ध धर्मानुयायियों की बस्ती थी। दयानन्द मोहाते भगवान बुद्ध की छोटी प्रतिमा लेकर आए और वह हमको समर्पित की।

सेन्ट जेवियर फुटबॉल ग्राउंड परेड में जैन और बौद्ध परम्परा के सम्मेलन का कार्यक्रम था। मंच पर एक ओर हमारे साथ अनेक साधु-साध्वियां बैठे थे, दूसरी ओर बंगाली बौद्ध भिक्षु धर्मरत्न, महाराष्ट्रियन भिक्षु राहुल बोधि, लंका के भिक्षु विवेकानन्द थेरा आदि बौद्ध भिक्षु उपस्थित थे। संसद सदस्य रामदास आठवलै भी रिपब्लिकन पार्टी के कार्यकर्ताओं के साथ कार्यक्रम में आए। चर्चा का निष्कर्ष यह रहा– जातिवाद और साम्प्रदायिक कट्टरता से उपजने वाली वैचारिक हिंसा तथा गरीबी, अभाव और बेरोजगारी से उपजने वाली सामाजिक हिंसा से समाज को कैसे मुक्त किया जाए।

समणीवर्ग ने ''जिसकी आज जरूरत उसने क्यों पहले अवतार लिया'' गीत का संगान किया। डॉ. एरिस ने **''बुद्धं सरणं गच्छामि, महावीरं सरणं गच्छामि''** का प्रभावी पाठ किया। मुनि दिनेश कुमार ने **'शांति का संदेश'** गीत का संगान किया।

जी.एम.जैन छात्रावास में हम पहुंचे। बौद्ध भिक्षु और कार्यकर्ता हमारे साथ चल रहे थे। मैंने कहा-''हमारा मिलन ही पर्याप्त नहीं है। हमें अहिंसा समवाय मंच के माध्यम से हिंसा के कारणों की खोज और उनके निवारण का प्रयत्न भी करना चाहिए।''

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

हमने देखा एक शांति का पुरोधा

५ अप्रैल २००३ संध्या का समय। बोहरा समाज के धर्मगुरु सैयद बुराहनुद्दीन के सेक्रेटरी श्री अहमदअली एमानी, अहमद असगर युसुफ़ आए। औपचारिक वार्तालाप के बाद उन्होंने कहा—८ अप्रैल को आप बालकेश्वर आ रहे हैं। हमारे धर्मगुरु सैय्यदना साहब आपसे मिलना चाहते हैं। वे बहुत वृद्ध है, यहां आने में असमर्थ हैं। आप सैफी महल में आएं, जहां सैय्यदना साहब रहते हैं।

८ अप्रैल को सैय्यदना साहब के बालकेश्वर स्थित सैफी महल में गए। सैफी महल का विशाल परिसर। सैकड़ों कार्यकर्ता हमारी अगवानी के लिए खड़े थे। सैकड़ों-सैकडों बोहरा समाज के सदस्य अपने धर्मगुरु की प्रतीक्षा कर रहे थे। सैय्यदना साहब मुख्य द्वार तक आए, स्वागत किया। सैफी महल के मुख्य हाल में एक अनायोजित कार्यक्रम आयोजित हो गया। प्रसन्न एवं उत्फुल्ल वातावरण में सरस वार्तालाप हुआ। वार्तालाप के कुछ अंश इस प्रकार हैं—

आचार्य महाप्रज्ञ—अनेक दिनों से आपसे मिलने की चर्चा चल रही थी। आपके प्रतिनिधि आए। उन्होंने आपकी भावनाएं प्रस्तुत की। आज साक्षात् मिलन हुआ है।

सैय्यदना साहब—और शांति के वातावरण में हुआ है।

आचार्य महाप्रज्ञ—जहां पीसफुल माइंड होता है, वहां पीसफुल वातावरण होता है।

सैय्यदना साहब—हां, आप बहुत सफर करते हैं।

आचार्य महाप्रज्ञ—ट्रेन, मोटर और वायुयान में नहीं।

सैय्यदना साहब—ओह!

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

आचार्य महाप्रज्ञ—हम पदयात्री हैं। इन पैरों से प्रायः पूरे देश का भ्रमण कर लिया है।

सैय्यदना साहब—(युवाचार्यश्री की ओर इशारा करते हुए) ये कौन हैं?

आचार्य महाप्रज्ञ—हमारे उत्तराधिकारी हैं, युवाचार्य हैं।

सैय्यदना साहब—युवा हैं।

आचार्य महाप्रज्ञ—हमारे गुरु आचार्यश्री तुलसी ने मानवीय चरित्र के उन्नयन के लिए अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया। वह नैतिकता, चरित्रनिष्ठा और मानवता के अभ्युदय का आंदोलन है। आज भी उस आंदोलन की प्रासंगिकता है।

सैय्यदना साहब—कितने वर्ष से चल रहा है?

आचार्य महाप्रज्ञ—पचास वर्ष हो गए। जन जन में नैतिक चेतना के जागरण का वह अभियान निरंतर चल रहा है। साम्प्रदायिक सौहार्द और भाईचारे की भावना के विकास का प्रयत्न भी चलता रहता है।

सैय्यदना साहब—दुआ यही है कि दुनिया में सब मिल जुलकर रहे, आराम से रहे।

आचार्य महाप्रज्ञ—भाईचारा एवं सौहार्द भाव से रहे।

सैय्यदना साहब—मजहब अलग अलग हो सकते हैं, इंसानियत नहीं।

आचार्य महाप्रज्ञ—आचार्य तुलसी ने मानवता का घोष उदात्त दिया—पहले इंसान इंसान, फिर हिन्दु या मुसलमान। सब मनुष्य पहले मनुष्य हैं, फिर और कुछ।

सैय्यदना साहब—हर शख्स आफ अक्ल, इंसान सबसे बड़ा जौहर। सब इंसान शांति से रहे, यही कामना है।

आचार्य महाप्रज्ञ—वर्तमान के हालात में बोहरा समाज ने शांति का वातावरण बनाए रखा, यह सुखद बात है। अभी गुजरात में दंगे हुए। हमने हिन्दु-मुस्लिम आदि सभी संबद्ध पक्षों से कहा—यदि विकास करना चाहते हो, शांति से रहना चाहते हो तो लड़ाई-झगड़े से दूर रहो। लड़ाई-झगड़े से दूर रहोगे तो शांति रहेगी। शांति होगी तो विकास होगा।

सैय्यदना साहब—आचार्यजी! आजकल दुनिया में क्या हो रहा है? कितना संघर्ष हो रहा है?

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

आचार्य महाप्रज्ञ—लड़ाई से आज तक किसी समस्या का समाधान नहीं हुआ है। इसमें बरबादी के सिवाय कुछ नहीं मिलता। गरीबी बढ़ती है दुःख बढ़ता है। लाभ में कोई नहीं रहता।

सैय्यदना साहब—कितना जन संहार होता है, खून खराबा होता है।

आचार्य महाप्रज्ञ—इसका मूल हेतु है मनुष्य का आवेश। अनियंत्रित आवेश इन समस्याओं का मूल कारण है। यदि आवेश संतुलित हो जाए, इमोशन पर कंट्रोल हो जाए तो शांति की स्थापना हो सकती है। अशांति का कारण है हिंसा और हिंसा कारण है आवेश। इस समस्या के समाधान पर ध्यान देना जरूरी है।

सैय्यदना साहब—इमोशन पर कंट्रोल कैसे हो सकता है?

आचार्य महाप्रज्ञ—इसके लिए हम प्रेक्षाध्यान के प्रयोग कराते हैं, उससे आवेश संतुलित होता है।

सैय्यदना साहब—इमोशन पर कंट्रोल होना दुश्वार है। किन्तु इंसान चाहे तो कर सकता है।

आचार्य महाप्रज्ञ—ध्यान-प्रयोगों से बहुत लोगों का आवेश संतुलित हुआ है। आवेश-नियंत्रण की एक निश्चित प्रयोग-पद्धति है। उसका अभ्यास करें तो सफलता मिलती है।

सैय्यदना साहब—(विषय बदलते हुए)—आचार्यश्री! आप इस अवस्था में इतना सफर करते हैं। सफर से थकान तो नहीं आती?

आचार्य महाप्रज्ञ—नहीं, यात्रा तो हमारा जीवन-व्रत है।

सैय्यदना साहब—आप यहां से कहां जाएंगे?

आचार्य महाप्रज्ञ—सूरत जा रहे हैं। वहां चातुर्मास है। हमें पता चला—आप यहां है। रास्ते में कहीं मिलन हो जाए। आज मिलन हो गया। प्रसन्नता हुई।

सैय्यदना साहब—हमें भी बहुत प्रसन्नता है।

आचार्य महाप्रज्ञ—आपका इमोशन शांत है।

सैय्यदना साहब—हां।

आचार्य महाप्रज्ञ—आप सबको ऐसा शांत बना दें तो कैसा रहे? मुसलमान समाज आप जैसा बन जाए.....।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

सैय्यदना साहब–हां, आचार्यश्री! सूरत हमारी युनिवर्सिटी है। आप वहां चार माह रहेंगे। आप युनिवर्सिटी में आएंगे?

आचार्य महाप्रज्ञ–हम अहमदाबाद भी चार माह रहे।

सैय्यदना साहब–अहमदाबाद में भी इस वर्ष बहुत तनाव का वातावरण रहा।

आचार्य महाप्रज्ञ–हां, हिन्दु-मुस्लिम दंगा हुआ। हमने दोनों पक्षों से बात की। हिन्दु और मुसलमान–दोनों ने कहा–'आचार्यश्री! आप जो कहेंगे, वह हमें स्वीकार हैं। दोनों पक्षों ने अनुभव किया–संघर्ष किसी समस्या का समाधान नहीं है। दोनों पक्षों ने शांति के साथ रहने का संकल्प किया। उस समय जगन्नाथ रथयात्रा का प्रसंग सन्निकट था। हमने सुना–तीन पूर्व प्रधानमंत्रियों ने उसे रोकने का परामर्श दिया। हमने कहा–यह बहुत भयंकर भूल होगी। इससे सदा के लिए विरोध का वातावरण बन जाएगा। हमने इस दिशा में प्रयत्न किए और वे सफल रहे। रथयात्रा बहुत शांति से निकली। हमें बताया गया–रथयात्रा के इतिहास में प्रथम बार इतनी शांति से रथयात्रा का आयोजन संपन्न हुआ। पहली बार उसमें किसी जैन मुनि ने भाग लिया।

सैय्यदना साहब–(भावपूर्ण स्वर में) यह आपके वेश की हिम्मत है।

आचार्य महाप्रज्ञ–हमने कहा–कोई हिन्दुस्तान को छोड़कर जाने वाला नहीं है। साथ में रहना है, तो शांति से रहें। यदि शांति और सौहार्द से रहोगे तो विकास होगा, तरक्की होगी। यदि लड़ते-झगड़ते रहोगे तो तनाव होगा, विकास अवरुद्ध होगा। लाभ तो किसी को नहीं होगा।

सैय्यदना साहब–लड़ाई-झगड़े में बिजनिस की तरक्की नहीं होती, समाज का विकास नहीं होता।

आचार्य महाप्रज्ञ–गरीब को दो समय रोटी मिलना मुश्किल हो जाता है। कुछ महत्त्वाकांक्षी अथवा असामाजिक तत्त्व अपने स्वार्थ के लिए लड़ा देते हैं। गरीब आदमी का जीना मुश्किल हो जाता है।

सैय्यदना साहब–झगड़ा होता है इलेक्शन के समय।

आचार्य महाप्रज्ञ–राजनीति बांटने का कारण है। राजनीतिज्ञ स्वार्थ-सिद्धि के लिए कुछ भी कर लेता है। यदि धर्म गुरु जनता का समुचित

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

सैय्यदना साहब—बोहरा का अर्थ है—व्यापार अच्छा करे।

आचार्य महाप्रज्ञ—तीन प्रकार के बोहरा का उल्लेख मिलता है। बोहरा व्यापारी का नाम है। यह शब्द व्यापक रहा है।

सैय्यदना साहब—कैसे?

आचार्य महाप्रज्ञ—हिन्दु-मुस्लिम दोनों समुदायों में बोहरा शब्द चलता है। जो व्यापारी होते हैं, उन्हें बोहरा कहा जाता है। राजस्थान में बोहरा लोग बहुत हैं। आप कभी वहां गए हैं?

सैय्यदना साहब—उदयपुर गया हूं। वहां हमारे अनुयायी रहते हैं।

आचार्य महाप्रज्ञ—उदयपुर हमारा भी मुख्य क्षेत्र है। जब राजस्थान में रहेंगे तब हमें भी वहां जाना है।

सैय्यदना साहब—आप निरंतर सफर करते हैं?

युवाचार्य महाश्रमण—हां, आचार्यश्री ने कोलकाता से कन्याकुमारी तक यात्रा की है।

आचार्य महाप्रज्ञ—क्या आप भी यात्रा करते हैं?

सैय्यदना साहब—हां, अभी आठ दिन बाद मेडागास्कर जाना है।

आचार्य महाप्रज्ञ—यात्राओं से जनता को लाभ मिलता है।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

मार्गदर्शन करते रहें, शांति का पैगाम देते रहें तो राजनीतिज्ञ कुछ नहीं कर सकता।

सैय्यदना साहब—व्यापार, रहन-सहन में पोलिटिक्स नहीं होनी चाहिए। ये सब स्वतंत्र होना चाहिए।

आचार्य महाप्रज्ञ—राजनीति बिजनिस में नहीं आनी चाहिए लेकिन आ गई।

सैय्यदना साहब—बोहरा का काम है बिजनिस करना, जिससे आपको भी फायदा पब्लिक को भी फायदा।

आचार्य महाप्रज्ञ—बोहरा शब्द का प्रयोग जैन आगमों में हुआ है। प्राकृत, अर्धमागधी और महाराष्ट्री भाषा में यह शब्द मिलता है। व्यापारी के लिए व्यवहार। व्यवहार का प्राकृत में बोहरा। बोहरा का अर्थ है, व्यापार करने वाला, व्यवहार करने वाला

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

सैय्यदना साहब—हां।

आचार्य महाप्रज्ञ—हमारे धर्मसंघ में सात सौ से अधिक साधु-साध्वियां हैं। वे पूरे देश में यात्रा करते हैं। हमारे सैकड़ों हजारों केन्द्र हैं। विदेश में भी अनेक सेन्टर हैं। एक नेतृत्व है, एक अनुशासन है। सब एक आचार्य की आज्ञा में चलते हैं। अभी हमने कांदिवली में मर्यादा-महोत्सव किया। पच्चीस हजार से अधिक लोग थे। उस दिन साधु-साध्वियों के आगामी वार्षिक कार्यक्रम की घोषणा करते हैं। चिंतनपूर्वक सारा कार्य निर्धारित होता है।

सैय्यदना साहब—आप इस उम्र में भी इतना श्रम करते हैं।

आचार्य महाप्रज्ञ—जिसके तनाव नहीं होता, वह सदा युवा रहता है और सुख की नींद लेता है। जो शांतिप्रिय होता है, शांति का जीवन जीता है, उसे बुढ़ापा कभी नहीं सताता।

सैय्यदना साहब—मोहम्मद साहिब ने कहा—सदा शांति से रहो। वालिद के बड़े भाई के बहुत तकलीफ थी। उनसे पूछा गया—नींद कैसे आती है? उन्होंने कहा—मुझे फिक्र नहीं है। फिक्र रब करता है। ताखा मैं रब की खाता हूं इसलिए मैं सुख की नींद लेता हूं।

आचार्य महाप्रज्ञ—यही प्रश्न गुजरात यात्रा में आचार्य तुलसी से मुनि अभयसागरजी ने पूछा था। उन्होंने विस्मय के साथ कहा—आचार्यश्री! मेरे पांच-सात शिष्य हैं। फिर भी मुझे नींद नहीं आती। आपके सात सौ शिष्य हैं। आपको नींद कैसे आती हैं? आचार्यश्री ने कहा—मुझे बहुत अच्छी नींद आती है। मुझ न कोई तनाव है और न कोई चिन्ता। अनुशासन, व्यवस्था और मर्यादाएं ऐसी हैं कि कोई तनाव और चिन्ता की अपेक्षा ही नहीं है इसलिए बहुत अच्छी नींद आती है। मुनिजी यह सुनकर स्तब्ध रह गए।

सैय्यदना साहब—जहां शांतिमय जीवन होता है, वहां समस्या नहीं होती, तनाव नहीं होता।

आचार्य महाप्रज्ञ—हां, आज काफी समय हो गया। अब हमें जाना होगा।

सैय्यदना साहब—(स्मित मुस्कान के साथ) हां, आचार्यश्री! आज पहली बार मिले हैं, अब मिलते रहेंगे।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

साम्प्रदायिक सद्भाव गोष्ठी

३ अप्रैल को साम्प्रदायिक सद्भाव गोष्ठी का आयोजन। उसमें अनेक संस्थाओं के १०० मुस्लिम बंधुओं ने भाग लिया। साम्प्रदायिक सौहार्द की दृष्टि से समीचीन चिंतन-मंथन हुआ। गोष्ठी के प्रारंभ में मैंने कहा-''आम आदमी लड़ना नहीं चाहता, वह शांति से रहना चाहता है। कुछ लोग अपने निहित स्वार्थों के कारण समाज में अलगाव पैदा करते हैं। ऐसे तत्त्वों से सावधान रहने की ज़रूरत है।''

भगवान महावीर का महत्त्वपूर्ण वचन है-''मनुष्य जाति एक है।'' हम अनेकता में एकता को खोजने का प्रयत्न करें। हमने अहिंसा यात्रा के दौरान हिंसा के कारणों पर बहुत विचार किया। गरीबी, बेरोजगारी आदि समस्याओं को शांतिपूर्ण वातावरण में ही सुलझाया जा सकता है।

इस गोष्ठी में भाग लेने वाले व्यक्तियों के विचार बहुत मननीय हैं–

युवाचार्य महाश्रमण–आचार्य प्रवर अहिंसा की चेतना के जागरण का पुनीत कार्य कर रहे हैं। इस कार्य में आशातीत सफलता भी मिल रही है। अहिंसा यात्रा के द्वारा समाज को जोड़ने का कार्य अच्छे ढंग से हुआ है और हो रहा है। सभी में प्रेम और भाईचारे की भावना विकसित होती रहे, यह समाज के शुभ भविष्य के लिए बहुत जरूरी है।

ऑल इंडिया मुस्लिम कमेटी के अध्यक्ष **मौलाना सैयद अख्तर**–''समाज विरोधी लोग धर्म और मजहब के नाम पर समाज में नफरत फैलाने का काम करते हैं। वे समाज को तो बदनाम करते ही हैं, इनके इस काम से धर्म की प्रतिष्ठा पर भी आंच आती है। इस्लाम इन्सानों की खिदमत में विश्वास करता है। हम आचार्य महाप्रज्ञजी के संदेश का सम्मान करते हैं।''

श्री अख्तर कुरैशी–आज के इस वक्त में इस प्रकार के जलसे और आपसी गुफ्तगू का आयोजन बहुत प्रासंगिक है। परस्पर मिलने से गलतफहमियां दूर होती हैं, आपसी दूरी भी कम होती है। ऐसे कार्यक्रमों का समय-समय पर

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

आयोजन होना चाहिए, जिससे समाज में दोस्ती की फिजां बरकरार रहे।''

जनाब इब्राहिम ताई–''आचार्य महाप्रज्ञ इंसानियत का पैगाम दे रहे हैं। उनके मिशन को कामयाबी मिले, इसके लिए हम सबको सहयोग करना है। इस दुनिया में विरले ही लोग मिलेंगे, जो इंसान को इंसान बनाने के नेक काम में लगे हुए हैं।

कर्बला मदरसा के सुपरिन्टेंडेंट **मौलाना अब्दुल अजीज**–'अमन और शांति की जरूरत हर आदमी को है। हर वक्त इसकी जरूरत रहती है। सभी धर्मों में कोई न कोई बड़ी खासियत देखने को मिलती है, किन्तु कौमी कट्टरता के कारण उसमें खराबी पैदा हो जाती है। आचार्य महाप्रज्ञजी फिरकापरस्ती और कट्टरता को मिटाने की कोशिश में लगे हुए हैं। आपकी कोशिश कामयाब हो, यह हमारी इल्तिजा है।''

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

तनाव शांति में बदल गया

सूरत चातुर्मास सम्पन्न कर हमनें महाराष्ट्र की यात्रा प्रारंभ की। १४ दिसम्बर,२००३ को हमारे सामने एक विशेष प्रसंग उपस्थित हुआ। हम धमनार से प्रस्थान कर ''देऊर'' जा रहे थे। सात किलोमीटर चलने के बाद 'म्हसदी' गांव के आस-पास पहुंचे। वह गांव बहुत बड़ा नहीं है, किन्तु शिक्षा का अच्छा केन्द्र है। गांव में प्रवेश करने से पूर्व कुछ शिक्षक हमारे पास आए और बोले-''आपको कुछ समय तक यहां रुकना चाहिए।'

मैंने कहा–''हमारा कार्यक्रम देऊर के लिए बन चुका है। हम यहां कैसे रुकें?''

शिक्षक बोले–''इस म्हसदी गांव में हिन्दू-मुस्लिम दंगे की तैयारियां हो चुकी हैं, एक-दो दिन में दंगा होने वाला है। सरकारी-तंत्र को पता है। पुलिस-बल की व्यवस्था हो चुकी है। हम जानते हैं कि पुलिस-बल से समस्या का समाधान नहीं होगा। आप अहिंसा यात्रा कर रहे हैं, हमें विश्वास है कि आपके प्रयत्नों से हमारी समस्या सुलझ जाएगी''।

मैंने कहा–यदि दंगे की समस्या है तो हम कुछ समय ठहर सकते हैं।' अनेक शिक्षक और विद्यार्थी हमारे साथ चल रहे थे। स्थानीय मराठीशाला में हम रुके । हिन्दू-मुस्लिम दोनों समुदायों के व्यक्ति सैकड़ों-सैकड़ों की संख्या में उपस्थित थे। शिक्षक वर्ग भी विद्यार्थियों के साथ वहां मौजूद था। दो-चार मिनिट के औपचारिक स्वागत के बाद मैंने अपने संक्षिप्त वक्तव्य में कहा-''आप क्या चाहते हैं? विकास अथवा गरीबी? यदि आप विकास चाहते हैं तो उसके लिए आवश्यक है शांतिपूर्ण वातावरण का निर्माण और शांत सहवास। शांति विकास की अनिवार्य शर्त है''।

''इतिहास को पढ़ने वाले जानते हैं कि हर लड़ाई का अंत शांति-वार्त्ता अथवा समझौतों से हुआ है। समझदारी यह है कि जो काम बाद में करना पड़े, वह पहले ही क्यों न किया जाए। आप लोग एक साथ बैठकर

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

बातचीत करें, समस्या सुलझाने का प्रयत्न करें। इस कार्य में यदि आप चाहें तो हम आपका सहयोग कर सकते हैं।''

उपस्थित जनसमुदाय ने सकारात्मक भावना प्रकट की। उस समय मुनि सुखलालजी और मोहजीतजी को वहां छोड़कर हमने देऊर की ओर प्रस्थान कर दिया। चार किलोमीटर की यात्रा कर हम वहां पहुंचे। प्रवचन सम्पन्न कर विद्यालय के कक्ष में बैठे थे। अकस्मात् मुनि सुखलालजी आए और उन्होंने कहा–कार्य सम्यक् प्रकार से सम्पन्न हो गया।

कुछ क्षणों के बाद हिन्दु और मुस्लिम समुदाय के सैकड़ों व्यक्तियों ने गोष्ठी में भाग लिया। काफी चिंतन चला। चिंतन के पश्चात् तेरह सदस्यीय शांति समिति का गठन किया। समिति के सभी सदस्य आपके सामने खड़े हैं। हमनें संकल्प किया है कि अब दंगा नहीं होगा। आचार्यश्री! हम आपको यह विश्वास दिलाते हैं कि म्हसदी में कभी भी भविष्य में भी दंगा नहीं होगा।

उनके साथ आए हुए पुलिस अधिकारी ने कहा-''पिछले कुछ दिनों से दोनों समुदायों के बीच तनाव चल रहा था। ऐसा लग रहा था कि कभी भी कुछ भी घटित हो सकता है। आपने कुछेक क्षणों में ही वातावरण बदल दिया, जनता का मानस बदल गया। जो कार्य डंडे के बल से भी नहीं हो रहा था, वह आपके संबोधन से संभव हो गया।''

म्हसदी के कार्यकर्ताओं ने अहिंसा प्रशिक्षण का कार्य चालू किया, वह आज भी सम्यक् प्रकार से चल रहा है। शांति की घटना को चिरस्थायी बनाने के लिए म्हसदी गांव के प्रमुख चौक का नाम ''अहिंसा चौक'' रखने की घोषणा की गई।

इस घटना पर चिंतन करते समय मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि समाज में यदि लोकमान्य नेतृत्व हो तो बहुत सारी हिंसक घटनाओं की दिशा बदली जा सकती है।

अहिंसा यात्रा के दौरान हम लोग बालोतरा (राजस्थान) में पहुंचे। स्वागत में हिन्दु-मुस्लिम सभी लोग सम्मिलित थे। मध्याह्न में एक गोष्ठी आयोजित की गई।

मैंने पूछा–यहां दोनों समुदायों के बीच शांति का वातावरण बना हुआ है। इसका हेतु क्या है?

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

एक भाई ने कहा-''हमारे यहां दोनों समुदायों के शीर्ष लोगों की एक समिति बनी हुई है। कोई भी समस्या सामने आती है तो वह समिति उसका समाधान करती है। समिति के निर्णय को दोनों पक्ष मान्य करते हैं, इसलिए कोई विवाद नहीं बढ़ता। म्हसदी में उसी की पुनरावृत्ति हुई। यदि अनेक समुदायों वाले गांवों में ऐसी समितियां गठित हो जाएं तो भिन्न-भिन्न समुदायों के बीच होने वाली हिंसक घटनाओं की इतिश्री की जा सकती है।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

बनास बस्ती : संकल्प की सिद्धि

२८ अक्टूबर,२००३ को चातुर्मासिक प्रवास के लिए हमनें सूरत में प्रवेश किया। कुछ व्यक्ति हमारे पास आकर बोले–तेरापंथ भवन बहुत विशाल और सुन्दर है। उसके पीछे श्रमजीवियों की एक कॉलोनी है। उसमें कुछ अपराधी मनोवृत्ति वाले लोग रहते हैं। संभवतः चातुर्मास में कुछ उलझने बढ़ सकती हैं।

मैंने कहा–''चिन्ता मत करो, उस बस्ती में अणुव्रत और अहिंसा प्रशिक्षण का कार्य शुरू करो। हमें अपराध की संभावनाओं से डरना नहीं चाहिए, किन्तु अपराध की मनोवृत्ति को बदलने का प्रयत्न करना चाहिए। अहिंसा यात्रा से यह अपेक्षा की जाती है कि अभाव और उससे पनपती अपराधी मनोवृत्ति को बदला जाए।''

सूरत में अणुव्रत-कार्यकर्ताओं की अच्छी टीम है। कार्य वही सफल होता है, जो योजना पूर्वक प्रबंधन की पद्धति से किया जाता है। कार्य की योजना बनी और कार्यकर्ता समर्पित भाव से उसमें लग गए। सबसे पहले बस्ती के प्रमुख लोगों के साथ संपर्क स्थापित किया, उनकी परिस्थितियों एवं मनःस्थितियों का अध्ययन किया तथा आत्मीयता के वातावरण का निर्माण किया। यदि आत्मीयता जुड़ जाए तो हिंसक को भी अहिंसक बनाया जा सकता है और अपराध की मनोवृत्ति से मुक्त किया जा सकता है। इस प्रसंग में महत्वपूर्ण बात यह है कि बनास बस्ती के श्रमिकों के साथ अणुव्रत के कार्यकर्ताओं की एकात्मकता स्थापित हो गई। कार्य का रास्ता प्रशस्त हो गया। संदेह के वातावरण में कभी अच्छा कार्य नहीं हो सकता। विश्वास की भूमि पर ही कार्य के बीजों की बुवाई की जा सकती है।

अहिंसा प्रशिक्षण का कार्य मुनि सुखलालजी ने संभाला, उनके सहयोगी बने अणुव्रत समिति के अध्यक्ष सुवालाल बोल्या, जीतमल गुलगुलिया, अंकेश भाई मेहता आदि कार्यकर्ता। रोजगार शुद्धि और रोजगार

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

प्रशिक्षण का कार्य अहिंसा-प्रशिक्षण का एक आयाम है, उसे रजनीकांत भाई ने आगे बढ़ाया। उनके पास रोजगार का प्रशिक्षण देने वाली एक टीम है। वह २५० विधा के गृह उद्योगों का प्रशिक्षण देती है। अणुव्रत उद्योग केन्द्र की स्थापना की गई। सिलाई की मशीनें दी गई। कुछ लोगों को नौकरी दिलाई गई। बनास बस्ती के लोगों में आत्म-विश्वास व स्वावलम्बन की भावना जागृत हो गई।

सूरत की महापौर स्नेहलता बैद और रूपाबहन शाह तथा महानगर-पालिका के अनेक कार्यकर्ताओं ने अणुव्रत समिति के कार्यों में रुचि ली और सहयोग भी किया।

सूरत में प्रवेश और स्वागत कार्यक्रम में महापौर स्नेहलता बैद ने Key of City भेंट की। मैंने कहा—झुग्गी झौंपड़ियों के ताला ही नहीं, फिर चाबी का क्या करूं? मुझे प्रसन्नता है कि सूरत के कार्यकर्ताओं ने चाबी घुमाने का क्षण प्रस्तुत कर दिया है।

युवाचार्य महाश्रमण साधुओं के साथ बनास बस्ती में गए। घर-घर के आगे आंगन में रंगोलियां सजाई गईं, स्वागत गीत गाए गए। एक उत्सव का वातावरण बन गया। बनास बस्ती का नाम ''प्रज्ञा नगर'' किया गया। अणुव्रती कार्यकर्ताओं की लगन और संकल्प की क्रियान्विति देखकर मुझे प्रसन्नता हुई।

अहिंसा प्रशिक्षण की चतुर्आयामी योजना की क्रियान्विति शुरू हो गई। चिन्तन और अनुभव के आधार पर यह दृढ़ विश्वास हो गया कि प्रशिक्षण के बिना अहिंसा के कार्य को आगे नहीं बढ़ाया जा सकता। यात्रा के दौरान हमने अनुभव किया कि गरीबी, बेरोजगारी और भूखमरी हिंसा के प्रमुख कारण हैं। गरीबी की समस्या बहुत बढ़ी है, इसे सुलझाना संभवतः किसी के वश में नहीं है। आजादी के छह दशकों में सरकार भी इस समस्या को नहीं सुलझा सकी। गरीबी से भी बढ़कर समस्या, बेरोजगारी व भूखमरी की है। अहिंसा प्रशिक्षण के साथ उन समस्याओं को सुलझाने का प्रकल्प भी रखा गया है।

अहिंसा प्रशिक्षण के चार आयाम हैं—

१. सिद्धान्त और इतिहास

२. हृदय परिवर्तन

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

३. अहिंसक जीवन शैली

४. सम्यक् आजीविका और आजीविका प्रशिक्षण

प्रथम तीन आयाम सैद्धान्तिक और व्यक्तित्व परिवर्तन के हैं, चौथा आयाम परिस्थिति में परिवर्तन लाने का है। स्वल्प समय में भी यह देखा गया कि अहिंसा का प्रशिक्षण लेने के बाद सैकड़ों-सैकड़ों व्यक्ति भूख की व्यथा से मुक्त हो गए।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

एक समस्या : एक प्रयोग

८ नवम्बर, २००३ को हमारा प्रवास क्षेत्र था लिम्बायत। वह सूरत का उपनगर है। वहां श्रमजीवी मुस्लिम समाज की बहुलता है। मदीना-मस्जिद के पास हमारा स्वागत किया गया। स्वागत द्वार बनाए और स्टेज भी बनाया गया। इस अवसर पर मैंने कहा–हम दस किलोमीटर का चक्कर लेकर लिम्बायत आए हैं। रास्ते में हिन्दू-मुस्लिम, जैन, बौद्ध, तेलंगु आदि अनेक संप्रदायों के व्यक्तियों ने हमारा स्वागत किया। हमने सुना है कि यह क्षेत्र सूरत का संवेदनशील क्षेत्र है। साम्प्रदायिक झगड़े यहां से शुरू होते हैं। ऐसा क्यों होता है? हम जानने आए हैं और इस स्थिति को कैसे बदला जा सकता है, इस विषय पर चर्चा करने आए हैं।

मैंने एक विचार प्रस्तुत किया–''हिंसा में अधिक शक्ति है या अहिंसा में? यदि कोई मानता है कि हिंसा में अधिक शक्ति है तो ३६५ दिन हिंसा करके देखे। अहिंसा का जीवन ३६५ दिन जीया जा सकता है, किन्तु हिंसा का नहीं।

एक मुस्लिम कार्यकर्ता ने कहा–३६३ दिन हम एक-दूसरे के साथ हिल मिलकर रहते हैं। पता नहीं क्या है कि दो दिन ऐसे आते हैं कि लड़ाई-झगड़े की भावना सिर पर हावी हो जाती है।

मैंने कहा–''हिंसा अल्प समय के लिए होती है, उसका परिणाम लम्बे समय तक भुगतना पड़ता है। जहां हिंसा का वातावरण रहेगा वहां आशंका, भय और गरीबी–ये तीनों बढ़ते रहेंगे। क्या ऐसे वातावरण का निर्माण किया जा सकता है, जहां हिन्दू विस्तार में मुस्लिम महिला रात को १२ बजे जाए और मुस्लिम विस्तार में हिन्दु महिला रात को १२ बजे जाए तो भी उसके मन में भय व्याप्त न हो।''

परिस्थिति को सुधारने के अनेक उपाय हैं–

१. शिक्षा।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

२. विभिन्न सम्प्रदायों के लोगों का पारस्परिक मिलन और एक-दूसरे के पर्वों का सम्मान।

३. बच्चों की लड़ाई में बड़े लोग भाग न लें।

सूरत की महापौर स्नेहलता बहन भी वहां उपस्थित थी। महानगर-पालिका के स्थानीय पार्षद चीनूभाई मंसूरी ने मुस्लिम समाज की ओर से विश्वास दिलाया कि अब हम दो दिन की तनाव की बात को भी समाप्त करेंगे।

हम जहां भी गए वहां हार्दिक स्वागत हुआ। उसमें हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सिक्ख, बौद्ध, जैन आदि सभी धर्माम्नायों के लोग भाग लेते थे। ''अहिंसा यात्रा'' सबके लिए एक आकर्षक शब्द बन गया था। मानवीय एकता, साम्प्रदायिक सौहार्द और अहिंसा का प्रशिक्षण–ये शब्द जनता के कानों में गूंज रहे थे। सैकड़ों बार कहूं तो अतिशयोक्ति नहीं होगी कि सभी जातियों और सभी धर्माम्नायों के लोगों ने कहा–''हम आपको जैन धर्म के आचार्य ही नहीं मानते किन्तु मानवता के आचार्य मानते हैं।''

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

अहिंसा समवाय मंच : एक गोष्ठी

अहिंसा यात्रा का कार्य अनेक दिशाओं में अनेक दृष्टियों और अनेक विधियों के साथ चल रहा था। वार्ता, संवाद, गोष्ठियां, प्रेस कान्फ्रेंस, साक्षात्कार आदि-आदि अनेक प्रवृत्तियां चल रही थी। हिंसा के कारणों की खोज और उनके निवारण के उपाय और क्रियान्विति के लिए आवश्यक था विचार मंथन।

एक, दो और तीन मार्च,२००३ को ''अहिंसा समवाय मंच'' के पक्ष पर चिंतन करने के लिए एक गोष्ठी की आयोजना की गई।

''परम सत्य तक पहुंचने के रास्ते अलग-अलग हो सकते हैं। कुछ अनेकताओं के बावजूद सभी धर्मों और पंथों में एकात्मकता का भाव विद्यमान है। दुनिया में भले ही परमाणु बम बने पर शांति के लिए अहिंसा से बड़ा कोई शस्त्र नहीं है''–उत्तरप्रदेश के राज्यपाल विष्णुकांत शास्त्री के ये विचार अहिंसा की अनिवार्यता का सूचन कर रहे थे।

''वैश्वीकरण के दौर में सुख-सुविधाएं बढ़ी हैं, किन्तु अहिंसा जैसे मौलिक मानवीय गुणों का क्षय होना चिन्ताजनक है। जिस कारगर शस्त्र से राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने हमें आजादी दिलाई, वह आज भी प्रासंगिक है।''

''जब समाज में कानून के प्रति आस्था खत्म हो जाती है तब हिंसा को पनपने का मौका मिलता है। आज हमें अगर मानवता के अस्तित्व को बचाना है तो महावीर, बुद्ध, गांधी और महाप्रज्ञ जैसे महापुरुषों के द्वारा निर्दिष्ट पथ को स्वीकार करना होगा''–सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश ए.एम. अहमदी के ये विचार संगोष्ठी के वातावरण में अहिंसा की चेतना को स्पन्दित कर रहे थे।

''आज छोटे बच्चों के पास भी बन्दूक और पिस्तौल के खिलौने हैं। ऐसी स्थिति में अहिंसा के विकास का चिंतन ज्यादा आवश्यक है''–

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

मुंबई उच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री चन्द्रशेखर धर्माधिकारी का यह वाक्य युग की समस्या की ओर इङ्गित कर रहा था। इसका मर्म यह है कि एक ओर बच्चों को खेलने के लिए हिंसक उपकरण दिए जा रहे हैं, दूसरी ओर हम उनसे अहिंसक व्यवहार की अपेक्षा रखते हैं। इस विसंगति पर अभिभावकों को गहरा चिंतन करना चाहिए।

आज अहिंसा की बात करना केवल धर्माचार्यों का ही काम नहीं है। समाज के हर वर्ग को इस दृष्टि से चिंतन और प्रयास करना चाहिए। ''अहिंसा समवाय मंच'' की गोष्ठी में अलग-अलग धर्मों और क्षेत्रों के प्रबुद्ध लोग भाग ले रहे हैं। इसका अर्थ है कि महाप्रज्ञजी की अहिंसा का संदेश समग्र मानवता के लिए है।

''अहिंसा की ही अहमियत है कि आज दुनिया भर में अमेरिका द्वारा इराक पर होने वाले संभावित हमले के खिलाफ प्रदर्शन हो रहे हैं। लोग युद्ध को नकार रहे हैं''–पूर्व लोकसभा अध्यक्ष शिवराज पाटिल ने हिंसा के चरम रौद्र रूप की ओर ध्यान आकर्षित किया। इससे यह संकेत मिल रहा है कि मानसिकता को बदले बिना आदमी व्यापक हिंसा के क्षेत्र में प्रवेश कर सकता है।

''अहिंसा के प्रचार-प्रसार की कार्य योजना बननी चाहिए। आस्था और संस्कार चैनल की तरह अहिंसा चैनल भी शुरू किया जाना चाहिए''–वरिष्ठ पत्रकार अनुराग चतुर्वेदी का यह विचार उपस्थित जन-मानस को आकर्षित कर रहा था।

अहिंसा समवाय मंच के इस त्रिदिवसीय आयोजन में डॉ. के. जगजीत, जगद्गुरु शंकराचार्य के परम शिष्य आनन्दस्वरूप ब्रह्मचारी, प्रोफेसर लियो लिबेरो, विलासपुर विश्वविद्यालय के कुलपति ब्रजेशपंत, डॉ. नटराजन, मदनमोहन मालवीय पत्रकारिता संस्थान के निर्देशक राममोहन पाठक, सोसायटी फॉर कम्यूनल हारमनी के अध्यक्ष मौलाना अब्दुल पारीख, सरदार लाभसिंह, प्रो. हंसराज सिंह, दक्षिण भारत से समागत जगद्गुरु माता महादेवी, रोटरी इन्टरनेशनल के राहुल टिम्बरिया, महाराष्ट्र के गृह निर्माण मंत्री नवाब मल्लिक, जम्बू से आए स्वामी मधु परमहंस, डॉ. भुवनेश मुनि, मोहम्मद साहेब, स्वामी दयानन्द आदि अनेक विचारकों और विद्वानों ने भाग लिया। हिंसा और अहिंसा के विविध पहलुओं पर विचार मंथन किया।

तीन दिन तक चलने वाली गोष्ठी में अहिंसा पर चिंतन करने वाले

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

कुछ विशिष्ट व्यक्तियों का नामोल्लेख किए बिना प्रस्तुति पूरी नहीं होगी। अहिंसा के विभिन्न पहलुओं पर विचार करने वाले व्यक्ति थे–पूर्व राज्यपाल शिक्षावद् डॉ. ए.आर.किदवई, शिक्षाशास्त्री फादर रोड्रिग बेटो, वरिष्ठ लेखक व पत्रकार श्री नन्द चतुर्वेदी, श्री नारायणभाई देसाई, सर्वोदयी नेता संत श्री बालविजयजी, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में बौद्ध अध्ययन विभाग के अध्यक्ष डॉ. भिक्षु सत्यपालजी, नवभारत टाइम्स के संपादक श्री विश्वनाथ सचदेव, नंदकिशोर नोटियाल, डॉ. धर्मेन्द्रनाथ अमन आदि अनेक महानुभावों ने अपने उद्गार व्यक्त किए।

तीन दिन की इस संगोष्ठी की सम्पन्नता के क्षणों में मैंने अनुभव किया कि अहिंसा के प्रति जनमानस में आकर्षण है। हिंसा समाज के लिए अभिशाप है। इस अनुभूति का स्वर भी व्यापक है। यह भी निर्विवाद है कि हिंसा में लिप्त लोगों की संख्या बहुत कम है। किन्तु अहिंसा को व्यापक स्वरूप देने के लिए जिस संगठित विचार शक्ति व कर्म शक्ति की आवश्यकता है, वह नहीं है। इसलिए अहिंसा की चर्चा विचार तक रह जाती है, वह कर्म के क्षेत्र में प्रभावी नहीं बन पाती।

मुंबई महानगर है, आर्थिक नगर है। वहां सभी वर्गों और संस्थाओं में अहिंसा यात्रा चर्चित हो रही थी। हिंसा और अहिंसा दोनों से संबंध रखने वाले अनेक व्यक्ति सम्पर्क में आ रहे थे। ४ मार्च,२००३ को हम मुंबई के उपनगर मलाड में प्रवास कर रहे थे। महाराष्ट्र के मंत्री नदीम खान अनेक मुस्लिम नेताओं को लेकर हमारे पास आए।

उनमें ऑल इंडिया जमायत उलेमाए–हिन्द, ऑल इंडिया पर्सनल लॉ बोर्ड उलेमा कौंसिल, दारुलउलूम मोहम्मद शिया, खाकसाने-हक मुस्लिम एक्शन कमेटी आदि संस्थाओं के वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया।

वार्तालाप के प्रसंग में मैंने कहा–इस देश में हिन्दू और मुसलमान दोनों हैं। दोनों को साथ में रहना है। दोनों में सामञ्जस्य हो, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व हो, यह अपेक्षित है। इसी में दोनों का हित है, देश का हित है, सबका हित है। इस संगोष्ठी का उद्देश्य है कि परस्पर सद्भावनापूर्ण वातावरण का निर्माण हो। हिन्दू और मुस्लिम समुदाय के लोग एक साथ मिल-बैठकर आपसी समस्याओं पर विचार-विमर्श करें और उनका समाधान खोजें तो आपसी सन्देह और दुःख से उत्पन्न भ्रान्तियों का सहज निवारण हो सकता है।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

ऑल इंडिया पर्सनल लॉ बोर्ड के वयोवृद्ध अध्यक्ष जनाब सतार शेख़ ने कहा–'जैन मुनि आचार्य महाप्रज्ञ से मिलकर हमें बहुत खुशी हुई। आप अहिंसा और शांति का पैगाम लेकर आए हैं। आपके इस मिशन में हम भी शरीक रहेंगे। एक इन्सान के बेटे और इसी मुल्क के वतनी वाशिन्दे होने के कारण हम में भाईचारे का दोहरा संबंध है। भारत के मस्तिकबिल को संवारने के लिए हमें इस रिश्ते को मजबूत करना होगा।'

उलेमा कौंसिल के सचिव मौलाना अब्दुल ओबेदीन कश्मीरी ने कहा–'आचार्य महाप्रज्ञजी दुनिया में फैले फसाद, बदअमनी के वातावरण में अहिंसा और अमन का पैगाम दे रहे हैं। हम इनकी इस कोशिश की तारीफ करते हैं। आपके इस बेहतरीन श्रम में हमारा दिलों-जां से सहयोग रहेगा।'

जमायते इस्लामी के अध्यक्ष मौलाना रियाज अहमदखान ने कहा-'हमें इस बात की खुशी है कि आचार्य महाप्रज्ञ ने एक ऐसे काम की शुरुआत की है, जो इन्सान को इन्सान बनाने में अपनी मुकम्मल भूमिका अदा करेगा। इस नेक काम में हम सब आपके साथ है।'

मुफ्ती सलीम अख्तर ने कहा–''आचार्यजी! आपने हिन्दू-मुस्लिम नेताओं को निकट लाने की जो कोशिश शुरू की है, वह बहुत शुभ है। आप दोनों की परस्पर गलतफहमियों को दूर कर सकते हैं। भाईचारा और एकजेहती कायम करने के इस काम में हम हर कदम पर आपके साथ रहेंगे।''

उस गोष्ठी में दारुल उलूम हनीफ, मुस्लिम एक्शन कमेटी के अब्दुल लतीफ खाकसाने-हक अध्यक्ष मौलाना मोहम्मद शाहिदी, महाराष्ट्र अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य इब्राहीम मकाइ आदि ने भी अपने भावपूर्ण उद्गार व्यक्त किए। संगोष्ठी में उपस्थित सभी वरिष्ठ व्यक्तियों ने इस कथन से अपनी सहमति व्यक्त की–'संवाद की कमी के कारण ही धर्म-संप्रदायों के बीच तनाव और दूरी पैदा हो रही है।' सबने असामाजिक तत्त्वों और समाज को बांटकर अपनी राजनीति करने वालों को इसके लिए जिम्मेदार ठहराया। संगोष्ठी में यह संकल्प व्यक्त किया गया–'धर्मगुरु एवं समाज के प्रमुख लोग मिलकर इस खाई को पाटने का प्रयत्न करेंगे, जिससे तनाव में कमी आए, परस्पर विश्वास और सौहार्द का वातावरण बने तथा देश में शांति और अमन चैन कायम रहे।'

अहमदाबाद में सम्पन्न शांतिपूर्ण रथयात्रा के समय हमारे द्वारा किए गए दो संकल्पों को व्यापक बनाने का निश्चय भी व्यक्त किया गया।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

१. किसी संप्रदाय के उत्सव, त्यौहार आदि का दूसरे संप्रदाय वाले अनादर न करें, यदि हो सके तो उदारतापूर्वक सम्मान करें।

२. कुछ व्यक्तियों द्वारा किए गए अपराध का पूरी जाति और संप्रदाय के लोगों से बदला न लें, सबको अपराधी न मानें।

इस संगोष्ठी में हिन्दू-मुसलमान समुदाय के मध्य भाईचारा, विश्वास और सद्भाव का वातावरण बनाने के प्रयत्नों को जारी रखने पर सहमति व्यक्त की गई। गोष्ठी में संभागी सभी वरिष्ठ व्यक्तियों ने अहिंसा यात्रा का मुस्लिम बहुल बस्ती भिंडी बाजार में स्वागत करने की घोषणा की। उन्होंने कुछ समय भिंडी बाजार में विराजने का आग्रहपूर्ण अनुरोध भी किया।

मुझे प्रसन्नता है कि अहिंसा यात्रा के प्रति केवल आकर्षण ही नहीं बन रहा है, सहभागिता का वातावरण भी बन रहा है। मैंने मुस्लिम नेताओं की विचारधारा का अनुमोदन किया और मंगलकामना की कि हम सब मिलकर ऐसी स्थिति का निर्माण करें जिससे धर्म के नाम पर कोई लड़ाई-झगड़ा न हो।

२६ मार्च को महाप्रज्ञ विद्या विहार में धर्माचार्यों की परिचर्चा का एक आयोजन किया गया। उसमें मुस्लिम, सिक्ख और पारसी समाज का प्रतिनिधित्व करने वाले व्यक्तियों ने भाग लिया। मौलाना मुस्ताक हसन आजमी ने हिंसा के लिए बेईमानी को जिम्मेदार ठहराया। उनका अभिमत था कि नैतिकता का विकास होने पर ही अहिंसा का विकास हो सकता है। फारसी समाज के आरविद असबिन्दर दादचिनजी ने इस बात पर बल दिया कि हम ऐसे वातावरण का निर्माण करें, जिससे विश्व में शांति रह सके।

ज्ञानी भाई रामसिंह ने विद्यार्थियों और अध्यापकों के बीच सघन कार्य करने का सुझाव दिया।

एम.यू.एन.ए. के जनरल सेक्रेटरी ए.ए. सैय्यद ने इस कार्य को आगे बढ़ाने का दायित्व लिया।

कांदीवली में मर्यादा-महोत्सव सम्पन्न कर हम मुंबई महानगर के उपनगरों की यात्रा कर रहे थे। १६ मार्च,२००३ को हम कालबादेवी के विद्यालय की तरफ जा रहे थे। अहिंसा यात्रा के कार्यकर्ताओं ने जो यात्रापथ निर्धारित किया, वह मार्ग भिंडी बाजार होकर जा रहा था। भिंडी बाजार मुस्लिम बहुल क्षेत्र है। इसलिए मुंबई के कार्यकर्ताओं ने कहा–हिन्दु समाज

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

के धर्मगुरु जुलूस के साथ इस रास्ते से जाने में संकोच करते हैं। आपको भी यह रास्ता बदल देना चाहिए। हमने कहा—अहिंसा यात्रा सद्भावना की यात्रा है इसलिए रास्ता बदलने की कोई आवश्यकता नहीं है। हमारे मन में न कोई भय है, न कोई आशंका।

१६ मार्च को हमने दादर से प्रस्थान कर भिण्डी बाजार में प्रवेश किया। जैसे ही हमारा प्रवेश हुआ, दो मुस्लिम बंधुओं ने एक कुरान शरीफ भेंट की। हम थोड़े आगे बढ़े तो देखा राजमार्ग के एक ओर मस्जिद है, दूसरी ओर मंच बना हुआ है। कुछ मुस्लिम भाई आगे आए और बोले—आप कुछ समय के लिए यहां ठहरे। मैं और युवाचार्य महाश्रमण मंच पर गए और दो-तीन मुस्लिम भाई भी मंच पर आए। मंच के परिपार्श्व में हमारे सहवर्ती साधु और साध्वियां, दूसरी ओर बड़ी संख्या में मुस्लिम भाई, सामने अहिंसा-यात्रा के साथ चलने वाला जन-समुदाय। माईक की अच्छी व्यवस्था थी। इसलिए जो वक्तव्य हुए, सबको सुनाई दे रहे थे। ऑल इण्डिया मुस्लिम कौंसिल के अध्यक्ष श्री इब्राहिम ताई ने मुस्लिम समाज की ओर से अभिनन्दन पत्र उपहृत किया और कुरान शरीफ भेंट की। मुस्लिम समाज की ओर से स्वागत करते हुए जनाब इब्राहिम ताई ने कहा—आप जैसे आला पुरुषों की रहनुमाई में ही अमन-चैन कायम हो सकता है। अहिंसा यात्रा ने जिस फिजां का निर्माण किया है, वह काबिले तारीफ है। उनका एक स्पष्ट चिंतन जनता के सामने आया कि हम उन धर्म गुरुओं का विरोध करते हैं, जो समाज को तोड़ते हैं। आप समाज को जोड़ रहे हैं, इसलिए आपका अभिनन्दन करने में हमें खुशी का अनुभव हो रहा है।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

अहिंसा सार्वभौम

मुंबई नगर के वातावरण में एक स्पन्दन हो रहा था। स्थान-स्थान पर अहिंसा का स्वर सुनाई दे रहा था। आयोजनों की मांग बढ़ रही थी। सबको स्वीकार करना हमारे लिए संभव नहीं था। समय की अपेक्षा के अनुसार कुछ आयोजन किए गए। उनमें आजाद मैदान में होने वाले आयोजन का बहुत महत्त्व है। इसलिए महत्त्व है कि इसकी संयोजना मुंबई पुलिस-परिमंडल एवं आजाद मैदान मुहल्ला कमेटी के संयुक्त तत्त्वावधान में हुई थी। इस कार्यक्रम में लगभग अनेक प्रमुख धर्मों के विद्वानों के विचार सुनने को मिले। वहां पुलिस प्रशासन के मंतव्य भी सामने आए। धर्मगुरुओं ने अपने-अपने धर्मग्रंथों के आधार पर अहिंसा के बारे में विचार व्यक्त किए। उन्हें सुनकर लगा—अहिंसा सार्वभौम है। पुलिस प्रशासन के अधिकारी वर्ग का विचार था कि अहिंसा और नैतिकता की चेतना के बिना अपराधों में कमी नहीं लाई जा सकती। इसलिए अहिंसा-यात्रा बहुत सामयिक और बहुत उपयोगी है।

इस आयोजन में मलग गरीब शाह बाबा, स्वामी गगनगिरिजी महाराज, डॉ. इशाक जामखानवाला, मौलाना कुद्दस कश्मीरी, मौलाना जहीर अब्बास, प्रसिद्ध इस्लामिक विद्वान डॉ. रफीक जकरिया, मौलाना अत्तारअली और समारोह के अध्यक्ष पुलिस आयुक्त श्री रणजीतसिंह शर्मा ने अपने विचार व्यक्त किए। सभी वक्ताओं ने समाज में प्रेम भाईचारे एवं शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की स्थापना पर बल दिया।

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org

जैन विश्व भारती
लाडनूं (राज०)

© Jain Vishva Bharati For Private & Personal Use Only https://books.jvbharati.org